वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
2004-2005

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

वार्षिक रिपोर्ट
ANNUAL REPORT
2004-2005

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS
NEW DELHI

विषय-सूची
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक रिपोर्ट
(1 अप्रैल, 2004 से 31 मार्च, 2005)

संकल्पना			1
न्यास का निर्माण			2
संगठन			2
कलानिधि			5
कार्यक्रम क	:	संदर्भ पुस्तकालय	5
कार्यक्रम ख	:	सांस्कृतिक अभिलेखागार	9
साँस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार			12
कलाकोश			18
कार्यक्रम क	:	कलातत्त्वकोश	18
कार्यक्रम ख	:	कलामूलशास्त्र	19
कार्यक्रम ग	:	कलासमालोचन	22
कार्यक्रम घ	:	कलाओं का विश्वकोश	22
कार्यक्रम ङ	:	क्षेत्र-अध्ययन	23
जनपद-सम्पदा			26
कार्यक्रम क	:	मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह	26
कार्यक्रम ख	:	बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियाँ	26
कार्यक्रम ग	:	जीवन-शैली अध्ययन	27
कलादर्शन			33
प्रदर्शनियाँ			33
स्मारकीय व्याख्यान			36
बाल जगत			36
सार्वजनिक व्याख्यान/चर्चा			36

सूत्रधार 37

कार्मिक 37

आपूर्ति एवं सेवाएँ 37

भवन परियोजना समिति 37

समन्वयन 38

अध्येतावृति योजनाएँ 38

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय केन्द्र - दक्षिणी क्षेत्र बैंगलौर 40

अनुबन्ध

1. : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य (6.11.2004 को सेवानिवृत) 42

2. : इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास के सदस्य (31.03.2005 को) 43

3. : केन्द्र के अधिकारियों तथा वरिष्ठ/कनिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं की सूची (31.03.2005 को) 44

4. : केन्द्र के प्रकाशन 47

INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

ANNUAL REPORT FOR THE PERIOD

1st April, 2004 to 31st March 2005

Contents

Concept			48
Formation of the Trust			49
Organisation			49
KALĀNIDHI			**52**
Programme A	:	Reference Library	52
Programme B	:	Cultural Archives	55
Cultural Informatics Lab			59
KALĀKOŚA			**65**
Programme A	:	Kalātattvakośa	65
Programme B	:	Kalāmūlaśāstra	65
Programme C	:	Kalāsamālocana	67
Programme D	:	Encylopaedia of Arts	68
Programme E	:	Area Studies	68
JANAPADA SAMPADĀ			**71**
Programme A	:	Ethnographic Collection	71
Programme B	:	Multi media Presentation	71
Programme C	:	Lifestyle Studies	72
KALĀDARŚANA			**78**
Exhibitions			78
Memorial Lectures			81
Children's Programme			81
Public Lectures/Discussions			81

SŪTRADHĀRA

Personnel	82
Services and Supply	82
Building and Projects Committee	82
Coordination	82
Fellowship Schemes	83
The Indira Gandhi National Centre for the Arts - Southern Regional Centre	83
	86

ANNEXURES

I	:	The Indira Gandhi National Centre for the Arts Board of Trustees (as on 6-11-2004)	88
II	:	The Indira Gandhi National Centre for the Arts Board of Trustees (as on 31.3.2005)	88
III	:	List of officers of the IGNCA, including Senior /Junior Research Fellows in the IGNCA (as on 31.3.2005)	89
IV	:	The IGNCA Publications between April 2004 to March 2005	90
			93

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
वार्षिक विवरण- 2004-2005

संकल्पना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इ.गाँ.रा.क.के.) श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में स्थापित एक ऐसी स्वायत्त संस्था के रूप में परिकल्पित है, जिसमें सभी कलाओं के अध्ययन एवं अनुभव का समावेश हो और कला का प्रत्येक रूप अपना एक पृथक् अस्तित्व रखते हुए भी, पारस्परिक अन्योन्याश्रय की स्थिति में प्रकृति, सामाजिक-संरचना और ब्रह्माण्ड-व्यवस्था के साथ सम्बद्ध हो।

कला विषयक यह दृष्टिकोण मानव संस्कृति के व्यापक परिवेश के साथ अखण्ड एवं अपरिहार्य रूप से सम्बद्ध है। यह श्रीमती गाँधी की इस मान्यता पर आधारित है कि वैयक्तिक एवं सामाजिक स्तर पर मनुष्य के अन्तर्भूत गुणों के समुचित विकास में, कलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह दृष्टिकोण एक ऐसी विश्वदृष्टि की भावना में समाविष्ट है जो अपने स्वरूप में समग्र है, भारतीय परम्परा में सर्वत्र मुखरित है और महात्मा गाँधी एवं रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रभृति आधुनिक मनीषियों ने जिस पर बल दिया है।

यहाँ कलाओं को बहुत व्यापक रूप में देखा गया है, जिसमें शामिल हैं- लिखित एवं मौखिक रूप में उपलब्ध सृजनात्मक व समीक्षात्मक साहित्य, वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला और लेखाचित्र से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म जैसी दृश्य कलाएँ, अपने व्यापकतम अर्थों में संगीत, नृत्य एवं नाट्य जैसी प्रदर्शनात्मक कलाओं तथा मेलों, उत्सवों एवं जीवन शैली में विद्यमान वह सभी कुछ जिसे किसी भी दृष्टि से कलात्मक कहा जा सकता हो। प्रारम्भ में केन्द्र ने अपना ध्यान भारत पर ही केन्द्रित किया है पर भविष्य में इसके क्षेत्र का प्रसार अन्य सभ्यताओं एवं संस्कृतियों तक हो जाएगा । अनुसन्धान, प्रकाशन, प्रशिक्षण, सृजनात्मक कार्यकलाप तथा प्रदर्शन के विविध कार्यक्रमों के माध्यम से केन्द्र, कलाओं को प्राकृतिक तथा मानवीय परिवेश के सन्दर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास करेगा। अपने समस्त कार्यकलाप में केन्द्र का आधारभूत दृष्टिकोण बहुविषयक एवं अन्तर्विषयक होगा।

केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं-

(1) लिखित, मौखिक एवं दृश्य सामग्री के विशेष परिप्रेक्ष्य में, कलाओं के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना।

(2) कला,मानविकी, और सामान्य सांस्कृतिक धरोहर से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थों, शब्दावलियों, शब्दकोशों, विश्वकोशों आदि के अनुसन्धान एवं प्रकाशन का कार्य।

(3) सुव्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन व सचल प्रदर्शनों के आयोजन हेतु क्रोड संग्रह के साथ-साथ जनजातीय एवं लोक कला प्रभाग स्थापित करना।

(4) प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों, बहुमाध्यमिक प्रस्तुतियों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं के क्षेत्र में तथा उनके बीच परस्पर सृजनात्मक एवं समीक्षात्मक संवाद तथा विचार -विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराना।

(5) दर्शन, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी वर्तमान विचारों और कलाओं के बीच संवाद को बढ़ावा देना ताकि बौद्धिक समझबूझ के उस अन्तर को दूर किया जा सके, जो अक्सर एक तरफ आधुनिक विज्ञान और दूसरी तरफ कला तथा संस्कृति, जिसमें परम्परागत कला-कौशल तथा ज्ञान शामिल है, के बीच उत्पन्न हो जाता है।

(6) भारतीय प्रकृति के अनुरूप अनुसन्धान कार्यक्रमों तथा कला प्रशासन हेतु आदर्श तैयार करना।

(7) विभिन्न सामाजिक स्तरों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के जटिल ताने-बाने के रचनात्मक एवं गतिशील तत्त्वों को स्पष्ट करना।

(8) भारत और विश्व के अन्य भागों के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता को प्रोत्साहन देना।

(9) कला और संस्कृति के अन्य राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्रों के साथ संचार-तंत्र का विकास करना, और कला, मानविकी और सांस्कृतिक धरोहर से सम्बद्ध शोध करने और उनको मान्यता प्रदान करवाने हेतु भारतीय तथा विदेशी विश्वविद्यालयों एवं अन्य उच्च शिक्षण संस्थाओं के साथ संबंध स्थापित करना।

विशेष कार्यक्रमों तथा परियोजनाओं के माध्यम से कलाओं और अन्य विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध, विभिन्न क्षेत्रों के मध्य परस्पर प्रभाव तथा जनजातीय, ग्रामीण, एवं नागरिक परम्पराओं के बीच पारस्परिक सम्बन्धों का, एवं इसी प्रकार भारत की लिखित एवं मौखिक धाराओं के मध्य पारस्परिक आदान-प्रदान का अन्वेषण, अभिलेखन और प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

न्यास का निर्माण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के कला विभाग के संकल्प संख्या एफ -16-7/86-कला, दिनांक 19 मार्च, 1987 के अनुसार, 24 मार्च,1987 को नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास का विधिवत् गठन एवं पंजीकरण किया गया। प्रारम्भ में एक सात सदस्यीय न्यास स्थापित किया गया था जिसका समय-समय पर पुनर्गठन होता रहा।

नवगठित न्यास की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सूची अनुबन्ध -2 पर दी गई है।

संगठन

अपनी संकल्पनात्मक योजना में उल्लिखित उद्देश्यों तथा अपने मुख्य लक्ष्यों को पूरा करने हेतु केन्द्र, संरचनात्मक दृष्टि से स्वायत्त, किन्तु प्रक्रियात्मक रूप से सम्बद्ध, पाँच संभागों के माध्यम से कार्य करता है।

कलानिधि इसमें (क) मानविकी विषयों तथा कलाओं में अनुसंधान हेतु प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए, बहुविध संग्रहों से युक्त एक सांस्कृतिक-सन्दर्भ पुस्तकालय है, जिसे सम्बल प्रदान करने के लिए (ख) कलाओं, मानविकी विषयों तथा सांस्कृतिक धरोहर पर एक कम्प्यूटरीकृत राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डेटा बैंक तथा (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार और कलाकारों/विद्वानों के बहुविध व्यक्तिगत संग्रह भी हैं।

कलाकोश यह संभाग आधारभूत अनुसन्धान का कार्य करता है। इसके दीर्घावधिक कार्यक्रमों में, (क) कला की आधारभूत संकल्पनाओं का एक कोश तथा मूलभूत तकनीकी शब्दों का संग्रह और अन्तर्विषयक शब्दावलियाँ, (ख) भारतीय कलाओं के आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला, (ग) भारतीय कला-विषयक, समीक्षात्मक साहित्य के पुनर्मुद्रण की शृंखला, (घ) भारतीय कलाओं का एक बहुखण्डीय विश्वकोश, तथा (ङ) क्षेत्र अध्ययन परक कार्यक्रम, सम्मिलित हैं।

जनपद-सम्पदा यह संभाग (क) लोक एवं जनजातीय कलाओं और शिल्पों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री का प्रलेखन करता है, (ख) बहुविध संचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुतियाँ करता है, (ग) भारतीय सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आयामों के ताने-बाने के वैकल्पिक मॉडल तैयार करने हेतु जनजातीय समुदायों की बहुविषयक जीवन-शैली के अध्ययन की व्यवस्था करता है। इसके साथ-साथ इस संभाग ने (घ) एक बाल रंगशाला स्थापित की है तथा एक (ङ)संरक्षण प्रयोगशाला स्थापित करने की भी सोच रहा है।

कलादर्शन यह संभाग कला एवं संस्कृति के एकीकृत विषयों तथा संकल्पनाओं पर अन्तर्विषयक संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों एवं प्रस्तुतियों के लिए एक मंच उपलब्ध करवाता है।

सांस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार 1994 में इस प्रयोगशाला की स्थापना, यू०एन०डी०पी० की सहायता से चलने वाली बहुमाध्यमिक प्रलेखन परियोजना ''स्ट्रेंगथेनिंग'' नेशनल फैसिलिटी फॉर इंटर-एक्टिव मल्टी मीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सेज़ द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के दिशा निर्देश से केन्द्र का दल इंटर-एक्टिव बहुमाध्यमिक प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में सक्षम हुआ। इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की संपूर्ण एवं अन्त:सम्बद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के यथार्थ पुन: सृजन के लिए किया जा रहा है।

सूत्रधार यह संभाग अन्य सभी संभागों को प्रशासनिक, प्रबन्धकीय और संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएँ उपलब्ध करवाता है।

संस्था के शैक्षणिक स्कन्ध अर्थात् कलानिधि एवं कलाकोश अपना ध्यान मुख्यत: बहुविध मूल एवं अनुषंगिक सामग्री के संग्रह पर केन्द्रित करते हैं। ये इसके लिए आधारभूत संकल्पनाओं की खोज करते हैं, आकार-आकृति के सिद्धान्तों का पता लगाते हैं और पारिभाषिक शब्दावलियों का स्पष्टीकरण प्रस्तुत करते हैं। यह कार्य वे सिद्धान्त और पाठ (शास्त्र) और बौद्धिक चर्चा (विमर्श) एवं निर्वचन (मार्ग)के स्तर पर इनकी व्याख्या के रूप में करते हैं। जनपद-सम्पदा एवं कलादर्शन, लोक, देश एवं जन के स्तर पर अभिव्यक्ति, प्रक्रिया, जीवन कार्यकलाप तथा जीवन-

-शैली और मौखिक परम्पराओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। कुल मिलाकर, चारों संभागों के कार्यक्रम कलाओं को, जीवन एवं अन्य कलेतर अनुशासनों से उनके सम्बन्ध को, वास्तविक सन्दर्भों में प्रस्तुत करते हैं। सभी संभागों की अनुसन्धान, कार्यक्रम-निर्माण व फलावाप्ति की प्रविधियाँ समान हैं। वैसे, हर संभाग का कार्य, अन्य संभागों के कार्यक्रमों का पूरक है।

वर्ष 2004-2005 के दौरान इ०गा०रा०क०केन्द्र का विस्तृत ब्यौरा इस प्रकार है।

1 अप्रैल, 2004 से 31 मार्च, 2005 तक की अवधि का वार्षिक प्रतिवेदन

सारांश

अपनी स्थापना के 18 वें वर्ष में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (केन्द्र) कलाओं के एक प्रमुख संसाधन-केन्द्र के रूप में कार्य करते हुए अपने सुपरिभाषित उद्देश्यों को प्राप्त करता रहा। इस हेतु केन्द्र ने कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में एकीकृत अध्ययन एवं शोध कार्यक्रम हाथ में लिए, जैसे, कलाओं तथा तत्संबंधी विषयों के मूल ग्रंथों, पारिभाषिक शब्दावलियों तथा रिपोर्टों का प्रकाशन। इसके अतिरिक्त, केन्द्र ने संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, व्याख्यानों और विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियों तथा मल्टी-मीडिया प्रस्तुतियों के माध्यम से सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद के लिए एक नियमित मंच प्रदान किया। इन कार्यक्रमों की व्याप्ति-परिधि में मूलभूत संकल्पनाओं तथा मीमांसात्मक विचार एवं संस्कृति से लेकर समकालीन अनुसंधान तक वह सब कुछ समाविष्ट है जिसका संबंध पुरातत्व, मानव विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पुस्तकालय विज्ञान, कंप्यूटर, मानविकी विषयों तथा कला इतिहास आदि सभी शास्त्रों से है।

कला तथा संस्कृति के प्रधान संसाधन केन्द्र के रूप में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने प्रदर्शनियों तथा संगोष्ठियों जैसे तरह-तरह के कार्यक्रमों के माध्यम से जनसाधारण तथा विद्वज्जन, दोनों के स्तरों पर ज्ञान के प्रचार-प्रसार में पर्याप्त योगदान दिया। उसने भारत तथा विदेश स्थित अनेक संस्थाओं तथा विद्वानों के साथ संपर्क स्थापित किए और उन्हें सुदृढ़ बनाए रखा। साथ ही, केन्द्र ने बहुत-सी संस्थाओं के साथ मिल कर अपने सहयोगात्मक कार्यक्रमों को अधिक व्यापक एवं घनिष्ठ बनाए रखने का प्रयास जारी रखा। आज इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विद्वानों तथा संस्थाओं के साथ बराबर संपर्क बनाए हुए है जो एक तरह से केन्द्र के बृहत्तर परिवार के ही सदस्य हैं।

कलानिधि

कलानिधि- एक राष्ट्रीय सूचना प्रणाली एवं डाटा बैंक के मुख्य घटक हैं-मुद्रित संग्रहों का एक उत्कृष्ट संदर्भ पुस्तकालय, माइक्रोफिल्मों/माइक्रोफिशेज का विशाल संग्रह स्लाइडों का एक ठोस संग्रह, सास्कृतिक अभिलेखागार एवं भारत दक्षिण एशिया एवं पश्चिम एशिया के पुरातत्त्व, मानवविज्ञान, इतिहास, दर्शन, साहित्य, भाषा एक सुसज्जित श्रव्य/दृश्य एवं फोटो प्रलेखन/कलानिधि का मूल उद्देश्य अर्न्तविभागों जैसे कलाकोश एवं जनपद सम्पदा में सतत् शोध कार्यों के लिए प्रमुख सूचना/ज्ञान के स्त्रोत केन्द्र के रूप में सहायता प्रदान करना तथा सांस्कृतिक सूचनात्मक प्रयोगशाला एवं कलादर्शन के तकनीकी सूचना सम्बन्धित आवश्यकताओं को पूरा करना एवं साथ-साथ भारत तथा विदेशों में सरकारी एवं गैर सरकारी शैक्षणिक संस्थानों के शोध कर्त्ताओं को सहायता प्रदान करना है। कलानिधि के संग्रह, देशी तथा विदेशी अनेक भाषाओं में हैं। इसमें स्रोत वस्तुओं की संख्या, मुद्रित एवं मुद्रित, 2.4 लाख से अधिक है।

कार्यक्रम-क

संदर्भ पुस्तकालय

इस पुस्तकालय में संदर्भ सामग्री पुस्तकों, स्लाइड्स, फोटोग्राफ,दृश्य-श्रृव्य सामग्री, अभिलेखीय संग्रह एवं माइक्रोफिल्म / माइक्रोफिश के रूप में हैं।

मुद्रित सामग्री -

पुस्तकालय में १२ भाषाओं में, जिनमें कुछ विदेशी भाषाए भी सम्मिलित हैं, मुद्रित 1,30,520 खण्ड हैं। यह पुस्तकें, लगभग एक हजार विषय सूची पत्रों के साथ, विस्तृत क्षेत्र के विषयों पर आधारित हैं। इनमें पुरातत्त्व शास्त्र, मानव विज्ञान, संरक्षण, संस्कृति, लोक परम्परा, इतिहास, मानविकी विषय, संग्रहालय, साहित्य, रंगमंच, सूचना विज्ञान, दर्शन तथा भाषा-विज्ञान जैसे विषय सम्मिलित हैं। पुस्तकालय में श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा श्री निर्मल कुमार बोस जैसे अनेकों प्रमुख विद्वानों के संग्रह मौजूद हैं। इन संग्रहों में मौजूद पुस्तकें, सूचीपत्र के अंश हैं परन्तु भौतिक रूप ले इन्हें अलग स्थान पर रखा गया है।

आलोच्य वर्ष में पुस्तकालय में 1229 पुस्तकें अर्जित गईं कीं जिनमें 653 पुस्तकें खरीदी गयीं। पुस्तकों के शीर्षक मुख्यतः योगतंत्र, कला एवं पुरातत्त्व शास्त्र, बौद्ध कला, इस्लामिक कला, भारतीय कला, साहित्य, इतिहास, लोक परम्परा तथा वैदिक एवं साहित्य से संबन्धित थे। जबकि 531 पुस्तकें राम शरण त्रिपाठी संग्रह से प्राप्त हुईं 45 पुस्तकें उपहार स्वरूप विद्वानों तथा संस्थानों से प्राप्त हुईं । इन पुस्तकों के विषय क्षेत्र पुस्तकालय के विस्तृत अध्ययन क्षेत्रों और अन्तर्विभागीय विद्वानों के प्रस्तावों पर आधारित हैं।

पुस्तकालय में कैटलॉगिंग, वर्गीकरण तदुपरान्त पुस्तकों की अवाप्ति का कार्य एक सतत् प्रक्रिया है। आलोच्य वर्ष में, 2005खण्डों का वर्गीकरण तथा कैटलॉग किया गया तथा वगीकरण का कार्य अमेरिकन

कैटलॉगिंग नियमों (ए.सी.आर II) के अनुसार किया गया। 1527 खण्डों के आँकड़ों को लिबसिस डेटा बेस में डाला गया जिससे विद्वानों के लिए पुस्तकालय में पुस्तकों को ढूंढने में आसानी हो। 2468 खण्डों के जिल्दबंदी का कार्य भी किया गया।

कलानिधि प्रभाग ने पुस्तकालय की सेवाओं को बढ़ाने तथा इसकी सदस्यता को बढ़ाने के लिए शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के साथ संपर्क करना आरम्भ कर दिया है। नए सदस्यों के नामांकन को प्रोत्साहित करने के लिए पुस्तकालय सदस्यता शुल्क में पुनविर्लोकन, अवैतनिक सदस्यता प्रदान करने, शैक्षणिक उपभोक्ताओं तथा व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए नए प्रतिमान प्रस्तावित किए गए हैं।

ग्रंथ सूची -

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, इंडियन इंस्टिट्यूट फॉर एशियन स्टडीज़ का एक सदस्य है। यह, कर्न इंस्टिट्यूट लाइदेन विश्वविद्यालय द्वारा 1926 में स्थापित ऐनुअल बिब्लियोग्राफी ऑफ द इंडियन आर्कियॉलॉजी का पुर्नजीवित स्वरूप है। आई.आई.जी.ए.एस 1997 में भारत, इंडोनेशिया तथा श्रीलंका के विद्वानों तथा शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से स्थापित हुआ। इस सहयोग का मुख्य उद्देश्य, भारत में पुरातत्त्वशास्त्र, कला एव वास्तुशास्त्र से सम्बन्धित शोध लेखों, शोध पत्रों एवं पुस्तकों के सारांश को सदस्य देशों के बीच आदान प्रदान करना है। कलाओं के अध्ययन के लिए समर्पित प्रमुख संस्थानों होने के नाते इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र भारत में वर्ष 2007 में परियोजना का समन्वय कार्यालय होगा। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय लगभग आरम्भ से ही विभिन्न विषयों पर ग्रंथ सूचियाँ तैयार करने में लगा है यह विद्वानों के संदर्भ के लिए उपलब्ध हैं।

31 मार्च 2005 ग्रन्थ सूची कार्यक्रम का लेखा जोखा 31मार्च,2005 तक निम्नलिखित रहा:-

- मुखौटे - 2250 प्रविष्टियाँ ।
- गन्धर्व कला (प्रदर्शनात्मक कलाएँ जिनमें संगीत, नृत्य एवं मंच सम्मिलित हैं - 306 प्रविष्टियाँ ।
- रामलीला (नेशनल मिशन फार मैन्युस्क्रिप्ट के लिए: यूनेस्को परियोजना) - 71 प्रविष्टियाँ ।

रिप्रोग्राफी-

पुस्तकालय का यह एकक देश के विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्म बनाने का कार्य करता है। माइक्रोफिल्म की मास्टर कुण्डली तथा उसकी एक प्रतिलिपि स्रोत पुस्तकालय को दे दी जाती है तथा एक प्रतिलिपि केन्द्र अपने पास रखता है। इस वर्ष इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 7143 पाण्डुलिपियां तथा 5,92,830 पत्रों पर आधारित 924 माइक्रोफिल्म कुण्डलियाँ तैयार की। राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, अलवर में मौजूद पाण्डुलिपियों के माइक्रोफिल्म की नयी परियोजना 13 मई 2004 से आरम्भ कर दी गई। इस परियोजना का विस्तार निम्नलिखित है:-

- गवर्नमेंट ओरियंटल मैनुस्क्रिप्टस लाइब्रेरी, चेन्नई - संस्कृत / तेलुगु देवनागरी में 76 कुण्डलियाँ तथा इनके विषय: न्याय, पुराण, शास्त्र हैं।

- राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, जोधपुर - संस्कृत / देवनागरी में 357 कुण्डलियाँ। विषय: पुराण, वेद, भक्ति।
- डॉ. यू.वी. स्वामीनाथन लाइब्रेरी, चेन्नई तमिल भाषा में 67 कुण्डलियाँ। विषय: पुराण, ज्योतिष विद्या, व्याकरण, औषधि।
- ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, मैसूर - संस्कृत, तेलुगु, कन्नड़ में 424 कुण्डलियाँ। विषय: निबन्ध, तंत्र, इतिहास, अलंकार।
- शंकर मठ कांचीपुरम -25 मूल कुण्डलियों से 50 प्रतिलिपि कुण्डलियाँ तैयार की गईं। केन्द्र में रिप्रोग्राफी एकक ने शंकर मठ के 155 पाज़िटिव कुण्डलियां पुस्तकालय को संदर्भ के लिए दी। यह मुख्यत: ज्योतिष विद्या, वेद, वेदान्त दर्शन, न्याय मीमांसा वेदान्त, काव्य, अलंकार, इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र, आगम एवं व्याकरण से सम्बन्धित है। प्रतिलिपि कार्य के अन्तर्गत 407 पाज़िटिव कुण्डलियाँ आलोच्य वर्षो में तैयार की गईं।

नई परियोजनाएँ -

निम्नलिखित संस्थानों ने अपने संग्रहों के माइक्रोफिल्म बनाने की अनुमति प्रदान की। यह कार्य पिछले वर्ष फंड की कमी के कारण नहीं लिया जा सका। इन्हें एक एक करके धन की उपलब्धि के अनुसार किया जाएगा।

(1) राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, जयपुर, (2) राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इस्टिट्यूट, कोटा (3) राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, बीकानेर (4) राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, उदयपुर (5) राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, भरतपुर (6) कामरूप अनुसंधान समिति, गुवाहाटी (7) द इंस्टिट्यूट आफ ऐण्टीक्वारियन स्टड़ीज, गुवाहाटी (8) गुवाहाटी यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी, गुवाहाटी, (9) आसाम स्टेट म्युज़ियम, गुवाहाटी।

स्लाइड्स एवं फोटोग्राफ्स-

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास एशिया में स्लाइड्स का सबसे विशाल एवं समृद्ध संग्रह है। केन्द्र ने कुछ सर्वोत्तम कला संस्थानों से संग्रह प्राप्त किया है। इस समय केन्द्र में 76,000 स्लाइड्स मौजूद हैं जो मूर्तिकला चित्रकला, सूक्ष्म चित्रकला, दुर्लभ पुस्तकों , वास्तुकला एवं वस्त्रों से सम्बन्धित हैं। आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित विषयों पर 104 श्रृव्य सम्बन्धित स्लाइड के रूप में तथा 722 सम्बन्धितत फोटो निगेटिव के रूप में संग्रह में जोड़े गए:-

1. स्टाटलिश संग्रहालय बर्लिन से 57 स्लाइड्स। विषय: कुषाण, गंधार, मौर्य, गुप्त एवं पाल कालों की पाषाण मूर्त्तियाँ।
2. राजस्थान की लोक कलाओं की 37 स्लाइड्स पंडित जवाहरलाल नेहरु जनजातीय संग्रहालय जयपुर से प्राप्त हुई।

3. गगनेन्द्रनाथ टैगोर की चित्र कलाओं पर 10 स्लाइड्स।

4. श्री लंका के बौद्ध स्मारकों एवं स्थानों के जिसमें पोलोन्नारुवा, अनुराधापुरा, सिगरिया के स्थान सम्मिलित हैं, 570 फोटो निगेटिव

5. हरियाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय, झज्झर, हरियाणा के संग्रह से प्राप्त गुप्त एवं मौर्य कालीन पाषाण एवं टेरा-कोटा, मूर्तिकलाओं के 36 फोटो निगेटिव।

6. सिटी पैलेस, अम्बर पैलेस एवं हवा महल से प्राप्त हुई (जयपुर के स्मारकों के 106 फोटो निगेटिव) फोटो एकक ने कुल्लू के रीति-रिवाजों एवं त्योहारों का प्रलेखन तथा भारतीय कला में स्त्रियों पर प्राप्त आंकडों को कैटलाग किया। इस एकक ने राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन को संरक्षिका का प्रदर्शनी में सहायता प्रदान की।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने म्यूज़ियम संग्रहों से सम्बन्धित सूचनाओं के प्रलेखन की एक परियोजना आरम्भ की। अब तक 51 संग्रहालयों ने आंकडे भेजे हैं जो कम्प्यूटरीकृत किए जाएंगे। संग्रहालय मे रखी गई वस्तुओं के फोटो-प्रलेखन का कार्य अगले वित्त वर्ष में किया जाएगा।

संरक्षण प्रयोगशाला

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के पास उपकरणों से सुसज्जित एक संरक्षण प्रयोगशाला है जो केन्द्र के अभिलेखित संग्रहों के निवारक एवं संरक्षण की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

आलोच्य वर्ष में इस संस्थान प्रयोगशाला ने निम्नलिखित कार्य किए:

- रामशरण त्रिपाठी संग्रह की पुस्तकों का यथापूर्वन।
- जनपदा संपदा के इथनोग्राफिक संग्रह के संगीत यन्त्रों का यथापूर्वन।
- जनपदा-सम्पदा के संग्रहो में से मुखौटों की मरम्मत तथा यथापूर्वन करना।
- पुस्तकालय की 2000 पुस्तकों का धूमीकरण।
- 12 पाण्डुलिपियों का उपचार।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संरक्षण प्रयोगशाला को दिल्ली एवं हरियाणा क्षेत्र के पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र के रूप में नामांकित भी किया है। इसके अंतर्गत पाण्डुलिपि संरक्षण पर इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 1-7 नवम्बर तक राष्ट्रीय स्तर की एक कार्यशाला आयोजित की गई। देश भर के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया तथा संरक्षण के क्षेत्र से सम्बन्धित विशेषज्ञों को स्रोत व्यक्तियों के रूप में आमंत्रित किया गया था। पाण्डुलिपियों के रख-रखाव पर एक दिशा निर्देश कार्यक्रम लडोथ (हरियाणा) के गुरुकुल में किया गया जिसमें पाण्डुलिपियों के अनेक संरक्षकों तथा विद्वानों ने भाग लिया।

कार्यक्रम - ख

सांस्कृतिक अभिलेखागार

सांस्कृतिक अभिलेखागार में विभिन्न उच्च कोटि की वस्तुओं के अनेकों बहुमूल्य संग्रह मौजूद है। अन्य वस्तुओं में राजा दीन दयाल के ग्लास प्लेट निगेटिव्ज, चित्रकलाएं फोटोग्राफ्स, पुराने मानचित्र एवं महान हस्तियों के व्यक्तिगत संग्रह जिन्हें एकत्रित, वर्गीकृत एवं सूचीकृत किया गाया है। अभिलेखागार में श्रृव्य दृश्य वस्तुएँ , इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की गतिविधियों तथा संग्रहों के फोटो प्रलेखन मौजूद है। श्रृव्य-दृश्य सामग्रियां संदर्भ के लिए उपलब्ध है। अभिलेखागार के संग्रहों को आंशिक रूप से नए भवन में स्थानान्तरित कर दिया गया।

वर्ष 2004-2005 में निम्नलिखित कार्य लिए गए:

- राजा दीन दयाल संग्रह के 3000 फोटोग्राफ्स का डिजिटाइज़ेशन !
- राजा दीनदयाल तथा 19 वीं सदी एवं 20 वीं सदी के आरम्भ के फोटोग्राफ्स पर सूचीग्रन्थ।
- डॉ. आर. पी. मिश्र संग्रह के ६१ विशाल मानचित्रों का भारत के महा सर्वेक्षक की सहायता से सूक्ष्म परीक्षण करके सी.डी. रोम के रूप में प्रतिलिपि तैयार करना।

प्रलेखन

श्रृव्य -दृश्य

आलोच्य वर्ष में श्रृव्य -दृश्य प्रभाग ने पूरे देश से इन्टैजिबल हेरिटज आफ इण्डिया परियोजना के दुर्लभ फुटेज प्राप्त करने के लिए विशाल प्रलेखन करके लक्ष्य को प्राप्त किया। इसमें 26 घंटे का कार्यक्रम में दूरदर्शन पर प्रसारित किया गया। निम्नलिखित परियोजनाएँ पूरी की गई:-

1. कावेरी नदी के किनारे स्थित वैदिक गुरुकुल ओम शान्ति धाम पर एकक ने वैदिक धार्मिक क्रियाओं के सतत् प्रलेखन के कार्यक्रम के अन्तर्गत गहन प्रलेखन का कार्य किया।
2. मीडिया ने कुरुक्षेत्र में सोमवती अमावस्या को धार्मिक पद्धतियों को प्रलेखित किया। साथ ही पण्डितों के कुछ दुर्लभ बहियों को जो 400-500 साल पुराने है तथा पाण्डुलिपियों को जिनमें गुरूनानक देव जी की कुरुक्षेत्र यात्रा का वर्णन है प्रलेखित किया।
3. जनपदा सम्पदा विभाग का क्षेत्र - सम्पदा कार्यक्रम सांस्कृतिक महत्त्व स्थानों/घटनाओं का अन्वेषण करता है । इसी संदर्भ में धार्मिक स्थानों से सम्बन्धित धार्मिक प्रक्रियाओं का प्रलेखन किया जाता है। 250वर्षों के अन्तराल पर केरल के त्रिसूर में अशोरयामा यज्ञ, एवं दुर्लभ धार्मिक प्रक्रिया, आयोजित की गई। 11 दिनों तक तीन कैमरे रात-दिन कार्य करते रहे। अनेकों वैज्ञानिकों

एवं चिकित्सकों द्वारा किए गए पर्यावरण, व्यक्तियों एवं वातावरण पर हुए इस यज्ञ के प्रभावों का अध्ययन को प्रलेखित किया गया।

12. क्षेत्र सम्पदा के साथ-साथ लोक परंपरा भी जनपद सम्पदा प्रभाग का कार्यक्रम है। यह मुख्यतः जनसाधारण, ग्रामीण तथा आदिवासी समुदायों के जीवन शैलियों का अध्ययन करता है। मीडिया एकक ने गंगा की यात्रा, मुखबा से गंगोत्री तक और फिर अक्षय तृतीया को गंगोत्री कपाट के खुलने आदि, को प्रलेखित किया। स्थानीय मतों के अनुसार, शरद ऋतु में गंगा मुखबा में निवास करती है तथा ग्रीष्मऋतु में अक्षय तृतीय से एक दिन पूर्व डोली में सवार होकर गंगोत्री से अपनी यात्रा आरम्भ करती है। इस धार्मिक प्रक्रिया में भक्तगण गंगोत्री की ओर 25 कि.मी. की पदयात्रा करते हैं। यह प्रलेखन अपने आप में अद्वितीय है यह पहला दूरदर्शन दल था जिसे इस कार्य का सुअवसर प्राप्त हुआ। प्रलेखन में उनके धार्मिक पद्धतियों से सम्बन्धित सभी तत्त्व जैसे मौखिक लोक-कथाएँ, ध्यान विस्तृत धार्मिक प्रक्रियाए एवं पर्यावरण सम्मिलित है।

5. भारत में मनाई जाने वाली रामलीलाएँ लोक परंपरा का अंश है। इनका प्रदर्शन इनकी विशेष अस्मिताओं से युक्त होता है जो बहुधा क्षेत्र विशेष की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों से प्ररित होता है। अयोध्या एवं वाराणसी में एक महीने से भी ऊपर, रामलीला परंपरा की विभिन्न शैलियों का प्रलेखन किया गया। दो घण्टे की संपादित फिल्म यूनेस्को में प्रस्तुत की गई ताकि रामलीला परंपरा को यूनेस्को की मौखिक एवं अमूर्त मानवीय धरोहर के लिए चुना जाए। यह समस्त प्रलेखन बिना बिजली एवं ध्वनि-प्रणाली के, कई कैमरो द्वारा बडी कुशलता से सम्पन्न हुआ था।

6. छत्तीसगढ़ की कलाकार उषा वार्ले तथा उनके दल द्वारा प्रस्तुत लोक परम्परा , छत्तीस गढ़ की पंथी नृत्य, छत्तीस गढ़ की लोक क्रिया राजा फोकलाबा तथा सुश्री ऋतु वर्मा द्वारा गाए गए राजा पण्डावनी गीतों का प्रलेखन एक दीर्घकालिक परियोजना के अंश के रूप में दिया गया ताकि जनसाधारण की पारम्परिक जीवन शैली तथा उनकी रचनाओं का प्रलेखन किया जा सके। इस श्रंखला के अंश के रूपी आंध्र प्रदेश एवं महाराष्ट्र, झबुआ एवं मधुबनी के वर्ली के चित्रकला शैली तथा तमिलनाडु के टेरा-कोटा फोटो के श्रृव्य-दृश्य को भी लिपिबद्ध किया गया।

7. बस्तर के लुहारों द्वारा, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में, 18 फुट के विशाल गेट के बनाने की विधि को प्रलेखित किया गया। दन्तेश्वरी देवी पर गाए गए धार्मिक गीतों, उनके नृत्य एवं कलाकारों के साक्षात्कारों को भी रिकार्ड किया गया।

8. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अतीत में प्रसिद्ध कलाओं से सम्बन्धित, चर्चाओं को भी रिकोर्ड किया हैं। इस श्रृंखला में कला और कलाकार शीर्षक के अन्तर्गत श्री बालान नाम्बियार, एस.जी वासुदेव एवं प्रो. एस.के.रामचन्द्र राव के कलात्मक अनुभवों को रिकॉर्ड किया गया।

9. दूसरा प्रमुख प्रलेखन समुद्री अभिलेखशास्त्र पर एक दुर्लभ फुटेज का था जो प्रो. एस. के. राव, जिन्होंने जलमग्न द्वारिका शहर के खोज दल का नेतृत्त्व किया था, के विस्तृत साक्षात्कार पर आधारित था।

10. इस एकक ने स्वतन्त्रता सेनानी एवं गांधीजी के घनिष्ठ सहायक प्रो. महेश मिश्र का साक्षात्कार भी रिकॉर्ड किया।

11. मीडिया ने, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा आयोजित छः सप्ताह की रंगमंच कार्यशाला के अंत में स्कूली बच्चों द्वारा खेले गए चरण दास चोर नामक नाट्य का भी प्रलेखन किया।

12. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के काव्य-दृश्य सामग्री को समृद्ध बनाने हेतु इ.गा.रा.क.केन्द्र के श्रव्य-दृश्य भण्डार को और समृद्ध बनाने के लिए मीडिया एकक ने आगरा में आयोजित इण्टर्नेशनल कांग्रेस ऑन राक आर्ट का तथा विश्व के विभिन्न भागों से आए हुए प्रतिनिधियों की आवाज़ को भी प्रलेखित किया। इसके पश्चात् भारत में वर्ल्ड रॉक आर्ट हेरिटेज साइट इन इंडिया, भीमबेटक में विशेषज्ञों ने कार्य किया।

13. शीश महल म्यूजियम पटियाला के संग्रहों का प्रलेखन किया गया तथा इ.गा.रा.क.केन्द्र के स्लाइड्स संग्रह में जोड़ा गया।

फोटोग्राफी

यह प्रभाग नियमित रूप से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभी कार्यक्रमों के फोटो प्रलेखन का कार्य कर रहा है। यह फोटोग्राफ प्रेस जनप्रचार, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का विहंगम समाचार पत्रिका विभाग तथा अन्तर्विभागीय विद्वानों तथा प्रभागों के लिए सर्वदा उपलब्ध रहते हैं।

कलानिधि दिवस

कलानिधि प्रभाग, अपना वार्षिक दिवस माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाता है क्योंकि यह दिन विद्या एवं ज्ञान की देवी सरस्वती को समर्पित है। इस वर्ष, कलानिधि प्रभाग का सोलहवाँ वार्षिक दिवस 13 फरवरी को मनाया गया। इ.गा.रा.क.केन्द्र न्यास की न्यासी, डॉ कपिला वात्स्यायन मुख्य अतिथि थी। इस अवसर पर इ.गा.रा.क.केन्द्र के कर्मचारियों के बच्चों के बीच चित्रकारी एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमे 57 बच्चों ने भाग लिया। मेसर्स सेगमेन्ट बुक तथा मेसर्स बेटर बुक सर्विसेस ने इस अवसर पर पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की। इ.गा.रा.क.केन्द्र प्रकाशनों को भी प्रदर्शन हेतु रखा गया।

कलानिधि रीडर्स फोरम

आई जी.एन.सी.ए. ने एक कलानिधि रीडर्स फोरम का शुभारम्भ किया है। इस केन्द्र अपनी अभिरुचि के क्षेत्रों में वार्षिक व्याख्यानों का आयोजन इस फोरम का मुख्य कार्य है। देश विदेश के शोधकर्ताओं के साथ पारस्परिक विचार विमर्श के लिए एक त्रैमासिक समाचार पत्रिका निकाले की योजना भी बनाई जा रही है।

इस फोरम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

1. कलानिधि के संग्रहों मे सुधार के लिए सलाह देना।
2. पुस्तकालय को संदर्भ सेवा की संरचना एवं विकास में सहयोग करना।
3. संग्रह तथा अन्य सामग्री के संरक्षण हेतु दिशा-निर्देश तथा,
4. कलानिधि की क्रियाओं एव प्रयोगों के विकास के लिए कार्य करना।

पुस्तकालए की सेवाओं में सुधार हेतु आई.जी.एन.सी.ए पूरे भवन में इण्टरनेट तथा इण्ट्रानेट सेवा प्रदान करने का संकल्प कर रहा है ताकि सभी संग्रहों की सूचना हर समय विश्व स्तर पर उपलब्ध रहे तथा सी.डी. पर डिजिटीकृत संग्रह को इण्टरनेट इण्ट्रानेट के माध्यम से सी.डी.एच-मिरर-सर्वर एक्सेस प्रदान किया जा सके। यह फोरम अनुच्छेद संकेतक तथा संक्षिप्त सूची डेटाबेस विकसित करना तथा मांग पर हाल के संग्रहों की सूची, समाचार डेटाबेस तथा ग्रंथ सूचियां उपलब्ध कराएगा तथा व्यक्तिविशेष एवं संख्या स्तर पर पुस्तकालय की सदस्यता के कार्य को बढ़ाएगा।

नेटवर्किंग

कलानिधि प्रभाग ने अन्य सांस्कृतिक संस्थानों, पुस्तकालयों एवं शोध संस्थानों के साथ एक विस्तृत नेटवर्क स्थापित कर रखा है। कुछ प्रमुख संस्थान हैं- लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, नई दिल्ली, नेशनल रिसर्च लेबोरेट्री फॉर कनर्वजन लखनऊ एवं नेशनल मयूज़ियम, नई दिल्ली।

साँस्कृतिक सायन्त्रिक संचार

इस प्रयोगशाला की स्थापना यू०एन०डी०पी० की सहायता से चलने वाली बहुमाध्यमिक प्रलेखन परियोजना स्ट्रेंगथेनिंग नेशनल फैसिलिटी फॉर इंटर-एक्टिव मल्टी मीडिया डॉक्यूमेंटेशन ऑफ कल्चरल रिसोर्सेज़ द्वारा की गई थी। विषय विशेषज्ञों के दिशा निर्देश से केन्द्र का दल इंटर-एक्टिव बहुमाध्यमिक प्रलेखन एवं सांस्कृतिक सूचना के गहन विश्लेषण में सक्षम हुआ । इस दक्षता का प्रयोग संस्कृति की संपूर्ण एवं अन्त:सम्बद्ध संकल्पना में सांस्कृतिक धरोहर के वर्चुअल पुन: सृजन के लिए किया जा रहा है।

साँस्कृतिक प्रलेखन तथा कला विषयों एवं सूचना प्रौद्योगिकी के बीच संवाद स्थापित करने प्रभृति क्षेत्रों में इस परियोजना ने क्रान्तिकारी कदम उठाए हैं । इससे नवीन प्रौद्यौगिकी के प्रयोग, विकास एवं प्रदर्शन के नए द्वार खुले हैं।

परियोजना में उच्च स्तरीय बहुमाध्यमिक सामग्री-निर्माण हेतु नए संरचना-मॉडल्स, विकास-प्रक्रियाओं तथा पुन:-अनुप्रयोज्य सॉफ्टवेयर टूल्स की संकल्पना, विकास एवं अनुप्रयोग किया गया है। यूएनडीपी परियोजना परिपूर्ण होने के बाद इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र न्यास ने सरकारी एवं सहयोगी परियोजनाओं तथा अन्य संस्थाओं से दल द्वारा अर्जित धन राशि से साँस्कृतिक सांयन्त्रिक संचार के कार्यकलापों को जारी रखने का निर्णय लिया है। सी०आइ०एल० की मुख्य गतिविधियों में केन्द्र द्वारा पूरी की गई परियोजनाओं पर आधारित सांस्कृतिक सूचना का, नई कला प्रौद्यौगिकी की सहायता से प्रचार-प्रसार, अन्तर्विभागीय सी०डी०रोम परियोजना का वितरण एवं वेबसाइट सम्मिलित हैं।

प्रभाग की गतिविधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है:-

- प्रायोजित परियोजनाएँ
- अन्तर्विभागीय सी डी रोम परियोजनाएँ
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट
- सी०आई०एल० की सहायक गतिविधियाँ

प्रायोजित परियोजनाएँ

कलासंपदा: डिजिटल लाइब्रेरी-रिसोर्सिज़ ऑफ इंडियन कल्चरल हैरिटेज (डी०एल०-रिच)

यह परियोजना संचार एवं सूचना प्रौद्यौगिकी मंत्रालय (एम०सी०आई०टी०) के द्वारा डिजिटल लाइब्रेरी इनीशियेटिव(डी०एल०आई०)-भारत के अन्तर्गत प्रायोजित की गई है। इस परियोजना का उद्देश्य इ०गा०रा०क०केन्द्र में मौजूद सांस्कृतिक धरोहर का एक डेटा बैंक विकसित करना है।

इ.गा.रा.क.केन्द्र के पास सास्कृतिक सामग्रियों, जिसमे पाण्डुलिपियों स्लाइड्स, दुर्लभ पुस्तकें, फोटोग्राफ पुस्तकों के शोधप्रारूप के साथ-साथ श्रृव्य एवं दृश्य, पत्रिकाएँ, सीडी.रोम एवं समाचार पत्रिकाएँ सम्मिलित है, का विशाल संग्रह है। यह दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ विभिन्न संस्थानों जैसे भंडारकर ओरियंटल रिर्सच इंस्टिट्यूट, पुणे: सिंदिया ओरियंटल रिर्सच इंस्टिट्यूट उज्जैन, गर्वन्मेन्ट ओरियंटल मैनुस्क्रिप्टस लाइब्रेरी, चेन्नई, सरस्वती भवन लाईब्रेरी, वाराणसी तथा अनेकों जगहों से एकत्रित की गई है।

कलासम्पदा, एक अतुलनीय परियोजना, विद्वानों/उपभोगताओं के लिए इ.गा.रा.क.केन्द्र में मौजूद एक लाख से अधिक पाण्डुलिपियाँ एवं स्लाइड्स, हजारों दुर्लभ पुस्तकें, दुर्लभ फोटोग्राफ, ऑडियो एवं विडियो के साथ उच्च शोध प्रकाशनों को एक ही माध्यम से देखने के लिए सुगमता प्रदान करेगा। बहुमाध्यमिक कम्प्यूटर तकनीकी का उपयोग एक साफ्टवेयर पैकेज के विकास में किया गया है जो विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक सूचनाओं को एक ही स्थान पर एकत्र करता है। यह भारतीय कला एवं संस्कृति को एकबद्धता के साथ, अध्ययन में नया आयाम देगा, साथ ही प्रत्येक माध्यम को उचित महत्ता भी प्रदान करेगा।

इस पद्धति का उद्देश्य सूचियों एवं सूचना का डिजिटल भण्डार तैयार करना है जो प्रयोगकर्ताओं के लिए अति सरल हो। ज्ञान पर आधारित ऐसा डेटाबेस विद्वानों को बहुस्तरों में रखे हुए ज्ञान को खोजने में सहायक होगा। इसकी मुख्य गतिविधियों में सामग्रियों का डिजिटीकरण, डिजिटीकरण, के पश्चात् सम्पादक, उच्च संरक्षण क्षमता तथा सभंव पर आपूर्ति करना, प्रभावशाली, पुन: प्राप्त पद्धति की सरंचना एवं विकास आदि सम्मिलित है।

आलोच्य वर्ष में डिजिटीकरण की गई वस्तुएँ इस प्रकार हैं।

पाण्डुलिपियाँ	43.95 लाख पृष्ठ
पुस्तकें	5000 पृष्ठ
फोटोग्राफ	4000
स्लाइड्स	1000
श्रृव्य/दृश्य	200 घंटे

डिजिटीकरण का कार्य चालू रखा जा रहा है जिससे भविष्य में डिजिटाइज्ड़ की सभी उपलब्ध वस्तुओं को एक स्थान पर एकत्रित किया जा सके। डिजिटीकरण के बाद के सम्पादन कार्य प्रगति पर है।

रिट्रीवल एप्लिकेशन का विकास किया गया है तथा ऐसी अधिकतर वस्तुएँ इ.गा.रा.क.केन्द्र के वेबसाईट पर आनलाईन उपलब्ध है। इनका प्रयोग करना अति सरल है और इनके लिए कई सांस्कृतिक सस्थानों ने इ.गा.रा.क.केन्द्र से सम्पर्क किया है।

इस परियोजना ने वर्ष 2004 के लिए डिपार्टमेंट ऑफ एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स एण्ड पब्लिक ग्रिवेंसेज़, भारत सरकार द्वारा बेस्ट डाकुमेंटेड नालेज एण्ड केस स्टडीगोल्डन आइकन एवार्ड फॉर एक्ज़ेम्पलरी इम्पलिमेंटेशन फॉर इ-गवर्नेस इनिशीयेटिव प्राप्त किया ।

एम.सी.आई.टी. द्वारा नियुक्त की गई समिति ने मार्च 2004में परियोजना की समीक्षा की। प्रोजेक्ट स्टीयरिव्यूग रिव्यू ग्रुप ने 19 जनवरी 2003 की बैठक में परियोजना की अवधि सितम्बर, 2005 तक बढ़ाने की सहमति दी।

कन्टेंट क्रिएशन एण्ड आई टी लोकलाइज़ेशन-नेटवर्क

संचार एवं सूचना प्रौद्यौगिकी मंत्रालय द्वारा प्रायोजित यह परियोजना ''सांस्कृतिक धरोहर डिजिटल पुस्तकालय'' पर हिंदी भाषा में वेबसाइट विकसित करने के लिए है, जो विशेष रूप से हिन्दी भाषी क्षेत्रों पर मुख्यत: उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड एवं राजस्थान पर केन्द्रित है।

विषय-विशेषज्ञों/शोधकर्त्ताओं एवं संबंधित क्षेत्र के विद्वानों द्वारा विषय-सूची तैयार की जा रही है, इसके अन्तर्गत जन की सामान्य धरोहर, काव्य एवं साहित्यिक धरोहर, वास्तुगत धरोहर, प्राकृतिक धरोहर एवं उन क्षेत्रों से संबंधित अन्य महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ मुख्य विषय हैं। परियोजना के लिए जो विषय सूची (पाठपरक एवं दृश्य) जोड़ी गई है वह हैं 8,000 से अधिक पाठपरक पृष्ठ, 3600 से अधिक छवियाँ तथा 56 घंटों की श्रव्य एवं दृश्य सामग्री यह परियोजना पूर्ण हुई । अंतर्क्रियात्मकता बढ़ाने के लिए ज़ूम टूल्स, शो ऑल इमेजेज़, स्लाइड शो, व्यू डिजिटल इमेजेज़, इ-ग्रीटिंग, हॉटस्पाट व्यूअर, कोगनिटिव मैप जैसे सॉफ्टवेयर उपकरणों का विकास किया गया। यह उपकरण टीडीआईएल डाउनलोड वर्ग के अन्तर्गत संचार एवं सूचना प्रौद्यौगिकी मंत्रालय के वेबसाइट पर डाउनलोडिंग हेतु उपलब्ध हैं। द प्रोजेक्ट स्टीयरिंग एण्ड रिविव ग्रुप ने 15 फरवरी, 2005 की सभा में परियोजना की अवधि सितम्बर, 2005 तक बढ़ाने की सहमति दे दी।

ओ.आर.आई. श्रीनगर में पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण-

सास्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट श्रीनगर में राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन की ओर से पाण्डुलिपियों के डिजिटीकरण में लगा हुआ है। प्रथम चरण में पाण्डुलिपियों के 600,000 पृष्ठों का डिजिटीकरण करना था। सितम्बर-दिसम्बर 2004 की अवधि म150,000 पृष्ठों वाली 500 पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण किया गया। डिजिटीकरण का कार्य, श्रीनगर में अप्रैल 2005 के प्रथम सप्ताह से पुन: आरम्भ होगा।

नेशनल म्यूज़ियम में पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण-

सी.आई. एल. ने जनवरी-मार्च 2005 में नेशनल म्यूजियम, नई दिल्ली में मौजूद 500 पाण्डुलिपियों का डिजिटीकरण किया।

थ्री-डी वाक थ्रु सी.डी. रोम आफ हरप्पन गैलेरी आफ नेशनल म्यूजियम-

नेशनल म्यूजियम के लिए थ्री-डी वाक थ्रु सी.डी. रोम हरप्पन गैलेरी शीर्षक से एक परियोजना तैयार की जा रही है।

लाल बहादुर मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली के लिए फोटोग्राफ

लाल बहादुर मेमोरियल ट्रस्ट, नई दिल्ली के लगभग 200 फोटोग्राफ का डिजिटाइज़ेशन एवं सम्पादन किया गया ।

जिससे इन छवियों को पोस्टर आकार में छाप कर लाल बहादुर मेमोरियल ट्रस्ट की गैलरी में लगाया जा सके। इनकी प्रतिलिपियाँ भी संदर्भ के लिए इ०गा०रा०क०केन्द्र में उपलब्ध है।

अन्तर्विभागीय सीडीरोम परियोजनाएँ

अजन्ता : एन इण्टरएक्टिव मल्टीमीडिया एण्ड वर्चुअल वाकथ्रू सीडी रोम

अजन्ता पर बनी यह सीडी-रोम भारत के एक प्रमुख धरोहर स्थल अजन्ता जो यूनेस्को की विश्व दाय स्मारकों सूची में है, पर विस्तृत ज्ञान एवं दृश्य अनुभव देने की एक कोशिश है। सीडी-रोम में सभी गुफाओं का वर्चुअल वॉकथ्रू,जातक एवं अन्य बौद्ध कथाओं का वर्णन, लगभग एक घंटे का परिचयात्मक विडियो, लगभग 1500 सचित्र छवियाँ, विद्वानों के लेख, ग्रंथसूची, शब्दावली आदि हैं। डिजिटल तकनीक का लाभ उठाते हुए खोज की सुविधा भी दी गई है ताकि सीडी में उपलब्ध सामग्री को, उनके प्रारूप को बिना विचारे, देखा जा सके। तकनीकी दृष्टि से यह वेबसाइट एक चुनौती भरा कार्य है क्योंकि समय की मार के चलते, ये गुफाएँ अस्तित्व के संकट में हैं। इसी कारणवश अधिक प्रकाशन का प्रयोग करने की अनुमति नहीं दी गई।

सी.डी रोम का विमोचन वर्ष 2005 में किया जाएगा।

देवनारायण

देवनारायण कथा राजस्थान की एक मौखिक परम्परा है। यह क्योंकि जनपद सम्पदा द्वारा चलाए गए जीवन शैली अध्ययन का एक अंश है सी.आई. एल. इसपर एक अन्तक्रियात्मक सी.डी. रोम तैयार कर रहा है जो इस परम्परा के विषय में पूरी जानकारी देगा। कहानी फड़ नामक विशाल पर्दे पर बनी चित्रकला के चारों ओर घूमती है। भोपा नामक एक व्यावसायिक गायक अपने गीतों तथा अभिनय के माध्यम से कहानी को आगे बढ़ाता है।

राजस्थान एवं मध्य प्रदेश की लोक चित्रकलाएं (सांझी)

(जनपदा सम्पदा प्रभाग के लिए कपड़ा मंत्रालय द्वारा प्रायोजित एक परियोजना)

यह परियोजना कपड़ा मंत्रालय की विशेषज्ञ समिति तथा डेवलपमेंट कमिशनर (हस्तकला) को 10 जनवरी 2005 को दिखायी गई।

बृज ग्रंथसूची परियोजना

क्षेत्र-सम्पदा कार्यक्रम में, जनपदा-सम्पदा प्रभाग की इस परियोजना के पाठ को परियोजना समन्वायक तथा मार्गदर्शक पं० श्रीवत्स गोस्वामी द्वारा सुझाए गए फार्मेट में तबदील किया गया।

अन्य परियोजनाएँ

निम्नलिखित अन्तर्विभागीय सी. डी. रोम परियोजना पूर्ण होने के विभिन्न स्तरों पर है:-

टू पिलिग्रम्स : एलिजाबेथ सास एवं एलिजाबेथ ब्रुनर की जीवनी एवं कार्य गीत गोविंद परियोजना तथा बृहदीश्वर मंदिर ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट (डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु डॉट आईजीएनसीए डॉट जीओवी डॉट इन)

1. आलोच्य वर्ष वेबसाइट पर निम्नलिखित अपलोड की गई :-
   - पाण्डुलिपियों, स्लाइड्स, पुस्तकों श्रव्य एवं दृश्यों के सूचीपत्र ।
   - इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की नवीनतम समाचार पत्रिकाएँ ।
   - उड़ीसा के मन्दिरों से सम्बन्धित परियोजनाएँ
   - प्रेस समीक्षाएँ ।
   - नारीवाद, देवताओं की घाटी इत्यादि पर सामग्री।
2. भारत सरकार के परिपत्र के अनुसार, इन्दिरा गाँधी राष्टीय कला केन्द्र की वेबसाइट का पंजीकरण (डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु डॉट आईजीएनसीए डॉट जीओवी डॉट इन)के रूप में हुई और इसी की मैपिंग वर्तमान साइट के साथ एन आई सी द्वारा की जाएगी।
3. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट सर्वाधिक लोकप्रिय वेबसाइट्स में से एक है जिसे पिछले छः मास में 86.41 औसत हिट्स प्रतिमाह के दर से लोगों ने देखा । (एन आई सी द्वारा विश्लेषित हिट्स के आधार पर)।

नेशनल म्यूज़ियम, नई दिल्ली के लिए प्रस्तुतीकरण

राष्ट्रीय संग्रहालय के लिए एक बहुमाध्यमिक प्रस्तुति विकसित की गई तथा इसे श्री जयपाल रेड्डी, सूचना प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री तथा मोंटेक सिंह अहलुवालिया, उपसभापति, योजना आयोग के समक्ष प्रदर्शित किया गया।

अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज़ (आई.आई.एस.) गुड़गाँव तथा बिल्डिंग मैटीरियल्स एण्ड टेकनालाजी प्रोमोशन काउन्सिल (बी.एम.टी.पी.सी.) नई दिल्ली के लिए बहुमाध्यमिक सीडी.रोम प्रस्तुति।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कम्प्यूटर उपभोक्ताओं को तकनीकी सहायता

सी आई एल द्वारा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभी विभागों को सभी प्रकार की तकनीकी सहायता (सिस्टम एडमिनिस्ट्रेशन, नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेशन, सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर इन्स्टॅलेशन, प्रोक्योरमेंट इत्यादि) प्रदान की गई।

कलादर्शन प्रभाग के कर्मचारियों को एक सप्ताह का कम्पयूटर-प्रशिक्षण चलाने का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

सम्मेलन/कार्यशालाएँ/संगोष्ठियाँ/व्याख्यान

अप्रैल 2004 में सूचना तकनीकी विभाग, एम.सी.आइ.टी.भारत सरकार द्वारा आयोजित इलेक्ट्रानिक एण्ड इनफार्मेशन टेकनॉलॉजी एक्सपोजीशन (एलिटेक्स) में कलासंपदा एवं कॉयल नेट परियोजनाएँ प्रदर्शित की गई।

अप्रैल 2004 में सी.आई एल के प्रतिनिधियों ने भारत सरकार द्वारा आयोजित इन्टरनेशनल कान्फ्रेंस ऑन डिजिटल लाइब्रेरी में भाग लिया।

जुलाई-अगस्त 2004में श्रीलंका में आयोजित एनोटेटेड बिब्लियोग्राफी आफ इण्डिया आर्ट एण्ड अर्कियोलजी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. के. के. चक्रवर्ती एवं श्री पी.झा ने भाग लिया।

अगस्त 2004 में, अमेरिकन इन्स्टीट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज़, गुड़गॉव में डिजिटल आर्काइव्ज़ पर श्री पी.झा. ने एक लेख प्रस्तुत किया।

नेशनल मिशन फार मैनुस्क्रिप्ट्स द्वारा आयोजित बेसिक स्टैंडर्डस आफ क्युरेटिव कंर्जवेशन नामक कार्यशाला में सी. आई.एल ने भाग लिया तथा सी.आई. एल. निदेशक ने डिजिटाइजेशन आफ मैनुस्क्रिप्टस शीर्षक से एवं लेख प्रस्तुत किया।

सितम्बर 2004 में पुणे में काइल-नेट परियोजना की समीक्षा सभा आयोजित हुई।

जनवरी 2005 में इलेक्ट्रानिक्स निकेतन, सी.जी. ओ. काम्प्लेक्स नई दिल्ली में कलासम्पदा परियोजना समीक्षा सभा आयोजित हई। परियोजना की प्रगति को प्रायोजक अभिकर्ता ने सराहा।

मार्च 2005 में इंडियन इन्स्टीट्यूट आफ इन्फार्मेशन टेक्नालाजी, इलाहाबाद में युनिर्विसल डिजिटल लाइब्रेरी इनीशिएटिव आफ एम.सी.आइ.टी. के अन्तर्गत ओ.सी.आर (आप्टीकल कैरेक्टर रिकगनिशन) एवं डी.एस. (डिजीटल सिग्नेचर) पर आयोजित संगोष्टि में डिजिटाइजेशन इनिशिएटिव ऐट दि आई जी एन सीए पर प्रस्तुति।

कलाकोश

कलाकोश प्रभाग केन्द्र के मुख्य अनुसन्धान तथा प्रकाशन स्कन्ध के रूप में कार्य करते हुए कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विद्यापरक संदर्भो में अनुसन्धान करता है। यह शास्त्र को संदर्भ के साथ, दृश्य को मौखिक के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है।

कार्यक्रम-क

कलातत्त्वकोश

(भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं का कोश)

कलातत्त्वकोश भारतीय कलाओं की आधारभूत अवधारणाओं का एक कोश है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत व्यापक शोध एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात् 250 संकल्पनाओं के शब्दों की एक सूची तैयार की गई है। प्रत्येक संकल्पना की गवेषणा विभिन्न विषयों के लगभग 300 मूलग्रन्थों से की गई है। इस शृंखला का प्रथम ग्रन्थ वर्ष 1988 में प्रकाशित हुआ था और तब से अब तक इसके पाँच खण्ड निकल चुके हैं इसका नवीनतम (खण्ड 5) जिसमें आकार /आकृति पर आधारित लेख हैं इस वर्ष के प्रारम्भ में प्रकाशित हुआ ।

कलातत्त्वकोश के संदर्भ कार्ड :-

यह इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी कार्यालय में होने वाला कलातत्त्वकोश का सतत् कार्य है, जिसके अन्तर्गत (पहले से सूचीबद्ध) सम्बद्ध ग्रन्थों से संदर्भ कार्ड तैयार किए जाते हैं। यह संदर्भ कलातत्त्वकोश के शब्दों से सम्बद्ध हैं, जिनका उपयोग प्रत्येक शब्द पर लेख लिखने के लिए किया जाता है।

इस शृंखला से प्रकाशित खण्डों की मांग को देखते हुए, कुछ खण्डों को पुर्नमुद्रण के लिए दिया गया है। देश-काल (टाइम-स्पेस) का खण्ड एक को पुनर्मुद्रण के लिए प्रकाशक मोतीलाल बनारसी दास को दिया गया । समीक्षाधीन अवधि में कलातत्त्वकोश खण्ड छः -पर्सेप्शन, आभास पर एक लेख सम्पादन के लिए प्रदान हुआ। इस खण्ड में नौ पारिभाषिक शब्द आभास, छाया, बिम्ब-प्रतिबिम्ब, सादृश्य-सारूप्य, अव्यक्त-व्यक्त, पद, लिंग-चिह्न-लांछन, वृत्ति-रीति और अनुकृति-अनुकीर्तन होंगे। कलातत्त्वकोश के अगले दो खण्डों, आयतन एवं प्रतीक-अभिप्राय के लिए लेख तैयार करने का कार्य प्रगति पर हैं।

कार्यक्रम - ख

कलामूलशास्त्र

(भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों की शृंखला)

कलाकोश प्रभाग का दूसरा निरन्तर कार्यक्रम है- वैदिक साहित्य, आगम, तंत्र, वास्तुकला, मूर्त्तिकला, चित्रकला, संगीत, नृत्य और नाट्य आदि सभी भारतीय कलाओं से सम्बन्धित आधारभूत ग्रन्थों का समालोचनात्मक सम्पादन करके टीका-टिप्पणियों एवं अनुवाद सहित, उन्हें ग्रन्थमाला में प्रकाशित करना। इस शृंखला के अतिरिक्त केन्द्र ने कुछ अन्य ग्रन्थों को प्रकाशित करने का कार्य लिया है, जो कलामूल शास्त्र शृंखला के लिए सन्दर्भ ग्रंथों का काम करेंगे।

1. वैदिक संस्कार - काण्वशतपथ ब्राह्मण खण्ड पाँचवा : सम्पादक एवं अनुवादक स्वर्गीय डॉ० सी०आर०स्वामीनाथन।

2. आगम (शैव) - अजितमहातन्त्र पाँचवा खण्ड : सम्पादक एवं अनुवादक प्रो० जे फिलियोजा, प्रो० एन०आर० भट्ट एवं पी. एस. फिलियोजा।

3. कला एवं वास्तुकला (पूर्व भारतीय/उड़ीसा)
   शिल्प प्रकाश : पुनरीक्षित संस्करण : सम्पादक प्रो० बैटिना वॉमर

प्रकाशन

निम्नलिखित कार्य पूर्णप्राय: हैं-

वैदिक संस्कारों पर सन्दर्भ ग्रंथ

1. इलस्ट्रेटिड डिक्शनरी ऑफ वैदिक रिचुअल्स : रेखाचित्र, दृष्टान्त एवं छायाचित्र सहित डॉ० एच०जी०रानाडे द्वारा संकलित कार्य । आशा है जल्दी ही प्रकाशक को दे दी जाएगी।

आगम (वैष्णव, पञ्चरात्र)

2. ईश्वरसंहिता : (पाँच खण्डों में)प्रो० एम०ए० लक्ष्मी तताचार द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित तथा (स्वर्गीय) प्रो०वी०वरदाचारी द्वारा विस्तृत प्रस्तावना के साथ पुनरीक्षित। इस ग्रन्थ के सभी खण्डों की सी आर सी तैयार हो चुकी है एवं सहप्रकाशक के पास भेजने के लिए संवीक्षाधीन है।

वैदिक अथवा श्रौत संस्कार (कृष्ण यजुर्वेद)

3. बौधायन श्रौत सूत्र भवस्वामी के भाष्य सहित (खण्ड-1, 2 एवं 3) प्रो० टी०एन०धर्माधिकारी ने इसका समालोचनात्मक सम्पादन किया तथा प्रस्तावना लिखी। तीनों खण्डों के प्रूफ की जाँच की जा रही है।

वैदिक/श्रौत संस्कार (सामवेदीय)

4. जैमिनीय-ब्राह्मण : प्रो० एच०जी०रानाडे द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद के पश्चात् पुणे में सम्पादक के निरीक्षण में टाइप-सेंटिग का कार्य किया जा रहा है ।

अलंकार शास्त्र (सौंदर्यशास्त्र)

5. रसगंगाधर - इसके दोनों खण्डों का समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद प्रो० रमा रंजन मुखर्जी ने किया है। टाईप-सैंटिग का कार्य चल रहा है।

सरस्वतीकण्ठाभरण

6. इसको तीनों खण्डों का समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवाद डॉ० सुन्दरी सिद्धार्थ ने किया है। अन्तिम कॉपी मुद्रण के लिए तैयार की जा रही है।

भारतीय कलाओं की आधारभूत संकल्पनाओं का अन्य भारोपीय भाषाओं के साथ सम्बन्ध

7. ग्लासरी ऑफ की आर्ट टर्म्स :- (स्वर्गीय) प्रो० विद्यानिवास मिश्र द्वारा 100 शब्दों की शब्दावली तैयार की गई। टाइप-सेंटिग का कार्य चल रहा है।

भारतीय सौंदर्यशास्त्र पर वैदिक ग्रन्थ सामग्री

8. कलाधार - यह (स्वर्गीय) प्रो० विद्यानिवास मिश्र द्वारा संकलित एवं सम्पादित ग्रन्थ। टाइप-सेंटिग का कार्य चल रहा है।

9. संगीत (दक्षिण भारतीय कर्नाटक)

चतुर्दण्डी प्रकाशिका (खण्ड-2) : प्रो० आर० सत्यानारायण द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित ग्रन्थ (मुद्रणाधीन) है।

संगीत (पूर्वी भारतीय संगीत शास्त्र, उड़ीसा)

10. संगीतनारायण-डॉ० मंदाक्रान्ता बोस द्वारा समालोचनात्मक सम्पादन एवं अनुवादित है। प्रारूपण सामग्री तैयार है।

संगीत (पूर्व मध्यकालीन उत्तर भारतीय)

11. नारद कृत संगीतमकरन्द- डॉ० एम विजयलक्ष्मी द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित है। इस ग्रन्थ का कार्य अंतिम चरण में है।

वास्तुकला एवं नगर योजना

12. समरांगणसूत्रधार - (खण्ड 1 और 2 एवं 3) डॉ० पी०पी०आप्टे एवं श्री सी० वी० काण्ड द्वारा संपादित एवं अनुवादित है एवं सम्पादकीय कार्य चल रहा है।

इन परियोजनाओं पर काम चल रहा है :-

वैदिक कर्मकाण्ड

1. गोपथ ब्राह्मण : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० समीरन चन्द्र चक्रवर्त्ती ।

वैदिक स्वर विज्ञान

2. याज्ञवल्क्य शिक्षा : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० नारायण दत्त शर्मा ।

वैखानस सम्प्रदाय

3. मरीचि-संहिता : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० एस०एन०मूर्त्ति ।

दक्षिण भारतीय प्रतिमालक्षण विज्ञान

4. तंत्र-सम्मुच्चय : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० के० के० राजा।

असाम्प्रदायिक पाँचरात्र

5. हयशीर्ष-पंचरात्र : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० गयाचरण त्रिपाठी

कर्नाटक संगीत

6. रागविबोध : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० रंगनायकी अय्यंगर

वास्तुशास्त्र

7. वास्तु मंडन : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० अनसूया भौमिक

बौद्ध दर्शन

8. शतसाहस्त्रिका प्रज्ञा पारमिता : सम्पादक एवं अनुवादक : डॉ० रत्ना बासु

शाक्त तंत्र

9. साधनमाला : सम्पादक एवं अनुवादक : पं० सातकड़ि मुखोपाध्याय

शैवागम

10. अघोरशिवाचार्य पद्धति : सम्पादक एवं अनुवादक : (स्वर्गीय) डॉ० एस० एस० जानकी

खगोल-विज्ञान

11. राजप्रश्नीय सूत्रम : सम्पादक एवं अनुवादक : एस०आर०सरमा ।

अंलकार शास्त्र

12. शारदातनय कृत भाव-प्रकाशन : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० जे०पी०सिन्हा

सौन्दर्यशास्त्र

13. वेदावित्त प्रकाशिक : सम्पादक एवं अनुवादक : प्रो० गयाचरण त्रिपाठी ।

कार्यक्रम – ग

कलासमालोचन शृंखला

(समालोचनात्मक विद्वत्ता और शोध के प्रकाशनों की शृंखला)

इस वर्ष इस कलासमालोचन कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकाशन प्रकाश में आए ।

1. द स्केल ऑफ इंडियन म्यूज़िक – ए कॉग्नेटिव एप्रोच टु थाट। मेलकर्त्ता : संपादक– डॉ० पी मुखर्जी।
2. क्राफ्टिंग टेडेडिशन ऑफ इंडिया – डॉ० मेहर अफ़्शान फारुकी
3. इन द कम्पनी ऑफ गौड्स – प्रो० जी०डी० सॉन्थाइमर मेमोरियल वॉल्यूम– सम्पादक डॉ० आदित्य मलिक, प्रो० एन्न फैल्डहाउस और प्रो० हाइड्रूनब्रूकनर।
4. इन मोनोग्राफ ऑन मादाम ला मेरी– सम्पादक उषा वेंकटेश्वरन
   आनन्द के०कुमारस्वामी शृंखला (ए०के०सी० शृंखला)
5. एसेज़ ऑन जैन आर्ट– इस कार्यक्रम के अन्तर्गत डॉ० आनन्द के०कुमार स्वामी की एक दर्जन से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित पुस्तकें मुद्रण के विभिन्न चरणों में है।

1. एलिमेंट्स ऑफ बुद्धिस्ट आइकॉनाग्राफी– स्वर्गीय श्री कृष्ण देव द्वारा सम्पादित ।
2. एसेज़ ऑन म्यूज़िक – स्वर्गीय डॉ० प्रेमलता शर्मा द्वारा सम्पादित।
3. लेटर्स ऑफ पं० बनारसीदास चतुर्वेदी; श्री नारायणदत्त शर्मा द्वारा संकलित एवं सम्पादित
4. ऑन द थ्रैशहोल्ड ऑफ इंडिया –मारथ ए० स्ट्रार्न
5. बालिसत्र भागवत पुराण – श्री बी०एन०गोस्वामी द्वारा सम्पादित एवं अनुवादित ।
6. शारदा एण्ड टाकरी एल्फाबेट्स : ओरिजन एण्ड डेवलॅपमेण्ट – बी.के.कौल डेम्बी।
7. कल्चरल हिस्ट्री ऑफ उत्तराखण्ड –प्रो० डी०डी०शर्मा।
8. संगीत सहित्य दर्शन ठाकुर जयदेव सिंह द्वारा एकत्रित निबन्ध ।

कार्यक्रम – घ

भारतीय कलाओं का विश्वकोश

न्यूमिस्मैटिक आर्ट्स ऑफ इंडिया– प्रो० बी० एन० मुखर्जी : यह परियोजना पूर्ण हो चुकी है। यह परियोजना आठ खण्डों में उपलब्ध है। मुद्रण हेतु 5 और 6 की अंतिम जाँच के लिए प्राप्त हुई है और अन्य अन्य खण्ड तैयार किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम - ङ
क्षेत्र अध्ययन
दक्षिण पूर्व एशिया कार्यक्रम

दो पुस्तकें - रिसेन्ट स्टडीज़ इन इण्डोनेशियन आर्कियॉलॉजी- प्रो० एडी सत्यावती एण्ड आई वायन आर्दिका द्वारा सम्पादित। डॉ० बच्चन कुमार द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशनाधीन पुस्तकें- आर्ट एण्ड आर्कियॉलॉजी ऑफ मेनलैण्ड साऊथ ईस्ट एशिया : न्यू पर्सपेक्टिव डॉ० बच्चन कुमार इ०गा०रा०क०केन्द्र के एक वरिष्ठ विद्वान है और उनके द्वारा दो रिसर्च पेपर तैयार किए गए। 1) द्वारावती आर्ट : एन इसथेटिक डिसकोर्स 2) बुद्धिज़्म एण्ड फॉरमेशन ऑफ वियतनाम्स कल्चरल आइडेन्टिटी (1से 10 शताब्दी ईस्वी)

पूर्व एशियाई कार्यक्रम

केन्द्र में भारत, चीन कॉर्नर पर एक दिन की संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी ने दुनहुआंग, चीन और भारत के विद्वानों ने भाग लिया।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और दुनहुआंग अकादमी के साँस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत दुनहुआंग अकादमी के दो चीनी विद्वानों डॉ० लियू और डॉ० जाहो ने भारत में एक मास तक महत्त्वपूर्ण पुरातत्व जगहों की यात्रा की।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शोध-पत्रिका कलाकल्प का द्वितीय अंक शीघ्र ही निकलने की आशा है। इस अर्धवार्षिक पत्रिका में कलाओं से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर विद्वानों के लेख सम्मिलित होते हैं। पत्रिका प्रकाशित होने से पूर्व विषय विद्वानों पत्रिकाओं की नियमित शुद्धियों में अपना सहयोग देते है।

विख्यात जर्मन इण्डियोलॉजिस्ट प्रो० डाइटर श्लिंग्लोफ की अजन्ता नामक पुस्तक में अनुवाद का कार्य मिस्टर पीटर हेसनर को सौंपा गया है और यह कार्य चल रहा है।

श्वेन-त्सांग एण्ड द सिल्क रूट - सेमिनार पर पुस्तक के सम्पादन का कार्य डॉ० राधा बनर्जी द्वारा किया जा रहा है।

वाराणसी कार्यालय

वर्ष २००४-२००५ के दौरान इ०गा०रा०क०केन्द्र, वाराणसी के संकाय ने कला कलातत्त्वकोश (खण्ड छः) के शोध पत्रों का सम्पादन किया एवं छाया तथा वृत्ति-रीति विषय पर प्रो० विश्वासनाथ भट्टाचार्य एवं प्रो० पी०के०अग्रवाल के मार्गदर्शन में कार्य किया । इसके अतिरिक्त कलातत्त्वकोश के संदर्भ कार्डों का निर्माण यथावत् चलता रहा।

ग्लॉसरी ऑफ की आर्ट टर्म्स की पाण्डुलिपि तैयार की जा रही है। एक लेख को छोड़ कर कलातत्त्वकोश (खण्ड छः) का प्रकाशन अन्तिम प्रूफ अवस्था में है। बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय आदि अनेकों संस्थाओं/विश्वविद्यालयों एवं अनेक भारतीय विद्याविदों से कलातत्त्वकोश की सामग्री संकलन हेतु संकाय सदस्यों ने सम्पर्क किया । प्रकाशन प्रक्रिया में कुछ विलम्ब हो गया है क्योंकि कुछ विद्वानों ने सौंपे गए लेख लिखने से इंकार कर दिया और यह कार्य फिर दूसरे सक्षम विद्वान को सौंपना पड़ा।

अनेक भारतीय विद्याविदों ने वाराणसी कार्यालय का दौरा किया । इनमें से कुछ प्रमुख हैं- प्रो० पी०के० अग्रवाल, प्रो० बैटिना बॉमर, प्रो० विश्वनाथ भट्टाचार्य, प्रो० जी० पाण्डा, प्रो० हरेराम त्रिपाठी, प्रो०बी०बी०चौबे, प्रो०मानसिंह, प्रो०जारो (अमेरिका), प्रो०फूलचन्द जैन, प्रो० युगलकिशोर मिश्र, प्रो०शिवजी उपाध्याय, प्रो० मंजुला चतुर्वेदी, डॉ० मार्क डिजिस्वकि तथा डॉ० रविन्द्र भट्टाचार्य (कलकत्ता विश्वविद्यालय)।

संदर्भ कार्ड

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी कार्यालय का प्रमुख कार्य संदर्भ कार्ड बनाना है। यह कार्ड विद्वानों द्वारा कलातत्त्वकोश के लेख लिखने में सहायक होते हैं। समीक्षाधीन वर्ष में संकाय द्वारा ३१९८ कार्ड्स बनाए गए। (१८कार्ड कलातत्त्वकोश खण्ड छः, ६१८कार्ड कलातत्त्वकोश खण्ड सात, ४४० कार्ड कलातत्त्वकोश खण्ड आठ, १७१ कार्ड कलातत्त्वकोश खण्ड नौ तथा १९५१ अन्य कार्ड)यह कार्ड हमारे कार्यालय में पाठानुसार एवं शब्दानुसार अद्यतन रखे जाते हैं तथा प्रति माह कम्प्यूटर में डाले जाते हैं। सम्प्रति वाराणसी कार्यालय में ४१३१६ कार्ड हैं।

सम्पादन

कलातत्त्वकोश खण्ड छः के सम्पादन का कार्य मुख्यतया बाहरी विद्वानों द्वारा जाता है। कभी-कभी लेख की गुणवता बढ़ाने के लिए पूरा लेख दुबारा लिखना पड़ता है। १०० शब्दों वाली ग्लॉसरी ऑफ की आर्ट टर्म्स नए सिरे से लिखी जा रही है और इसका अधिकांश टाइप-सैटिंग का कार्य इस वर्ष पूरा हुआ । इसके बाद इसका सम्पादन किया जाएगा।

संगोष्ठियाँ/व्याख्यान

१. २.०७.०४ को फाउंडेशन ऑफ इंडियन आर्ट द्वारा प्रो० मंजुला चतुर्वेदी,काशी विद्यापीठ; अध्यक्ष प्रो० वी०एन० मिश्र ।

२. २२.०९.०४ को दर्शपूर्णमासेष्टि यागविधि के प्रतीकों का निहितार्थ द्वारा प्रो० युगलकिशोर, संस्कृत यूनिवर्सिटी।

३. १५.१०.२००४ को पौराणिकाख्यान विमर्श द्वारा प्रो० गंगाधर पाण्डा, संस्कृत यूनिवर्सिटी;अध्यक्ष वाई० के० मिश्र ।

४. ३१.०१.०५ को जैन दर्शन में सम्यक ज्ञान मीमांसा द्वारा प्रो० फूल चन्द जैन, संस्कृत यूनिवर्सिटी; अध्यक्ष प्रो० शिवजी उपाध्याय ।

५. २८.०२.०५ को साहित्य सिद्धान्त और स्फोट द्वारा प्रो० विश्वनाथ भट्टाचार्य ;अध्यक्ष प्रो० आर०सी०शर्मा। सभी व्याख्यानों में कार्यालय के स्टाफ सहित अनेक विद्वानों ने सहभागिता की ।

कलातत्त्वकोश की बैठक

२०.०७.२००४ को प्रो० वी०एन०मिश्र (अब दिवंगत) की अध्यक्षता में कलातत्त्वकोश की बैठक सम्पन्न हुई । इस बैठक में प्रमुख निर्णय लिए गए- १. कलातत्त्वकोश खण्ड छः के सम्पादक डॉ० एस० चट्टोपाध्याय एवं डॉ०एन०सी०पाण्डा होंगे। २. कलातत्त्वकोश खण्ड सात के सम्पादक प्रो० जी०सी०त्रिपाठी एवं डॉ०ए०कौल होंगे। ३. कलातत्त्वकोश खण्ड आठ का सम्पादन प्रो० जी०सी०त्रिपाठी करेंगे।

विविध

१४.०२.२००५ को गोरखपुर से वाराणसी लौटते समय एक दुःखद हादसे में हमारे माननीय समन्वायक प्रो० वी०एन०मिश्र कार दुर्घटना में दिवंगत हो गए। २४.०२.२००५ को उनके लिए एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई ।

जनपद सम्पदा

जनपद-सम्पदा प्रभाग आर्थिक-साँस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टियों से समुदायों की जीवन शैलियों, परम्पराओं, लोक विद्या एवं कला प्रणालियों सहित संस्कृति के सैद्धांतिक आयामों पर शोध तथा प्रलेखन से सम्बन्धित है। मौखिक परम्पराओं पर केन्द्रित इस प्रभाग का कार्यपटल विभिन्न साँस्कृतिक दलों तथा समुदायों के बीच अन्तस्संबंधों को बल देते हुए, बहुविषयक दृष्टिकोण से क्षेत्रीय अध्ययन तक फैला है। इस प्रभाग के कार्यकलाप निम्नलिखित है:-

क). मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

ख). बहु माध्यमिक प्रस्तुतियाँ तथा गतिविधियाँ

ग). जीवन शैली अध्ययन 1. लोक परम्परा 2. क्षेत्र सम्पदा।

कार्यक्रम - क

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह

मानवजाति वर्णनात्मक संग्रह : इन संग्रहों में मूल अनुकृतियाँ तथा रिपोग्राफिक प्रतिलिपियों का अर्जन शोध, समीक्षा व प्रसार हेतु आधारभूत स्रोत सामग्री के रूप में किया जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य किए गए :-

कैटलागिंग

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित मानवजाति वर्णनात्मक संग्रहों को कम्प्यूटर कैटलागिंग/प्रविष्टियाँ की गई :-

- कान्था, फुलकारी, चिकनकारी (सभी सुई काम) रबारी वस्त्र, (कशीदाकारी एवं शीशे के काम), एवं खानाबदोश रबारी समुदाय से संबंधित वस्तु तथा स्लाइड्स एवं फोटोग्राफ।
- कठपुतली कला पर सी.डी.रोम तैयार करने का कार्य प्रगति पर है।

कार्यक्रम - ख

बहुमाध्यमिक प्रस्तुतीकरण एवं कार्यक्रम

आदि दृश्य एवं आदि श्रृव्य

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यक्रमों का एक महत्वपूर्ण कार्य मानव की मूल/ मौलिक अवबोधन शक्तियों में से कलात्मक आविर्भावों का अन्वेषण करना है। सम्भाव्यत: मानव को अपनी दृश्य एवं श्रृव्य आदिम शक्तियों के फलस्वरूप ही संसार के प्रति जागरूकता का बोध हुआ। शैलकला आदि दृश्य कार्यक्रम का महत्त्वपूर्ण संघटक है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 2004-2005 में निम्नलिखित परियोजनाएँ सम्पन्न की गई।

सम्पन्न परियोजना

वाल्कामोनिका घाटी की शैलकला पर क्षेत्र अध्ययन किया गया। नैचुरल पार्क आफ नागुएन, रीजनल रॉक आर्ट रिज़र्व पार्को कम्युनेल डि ल्यून आदि शैल कला क्षेत्रों/स्थानों पर अध्ययन किया गया। वाल्कामोनिका को शैलकला में पत्थरों के उपरी सतह पर से खुदाई करके नक्काशी की गई है। और जब सबको समय एवं काल के अनुसार मिलाया गया तो वे यूरोपियन सभ्यता के जन्म की झलकी दिखलाते हैं।

वाल्कामोनिका शैल कला के अध्ययन के दौरान डॉ.बी.एल मल्ला ने ग्यारहवीं अन्तर्राष्ट्रीय वाल्कामोनिका संगोष्ठी में भाग लिया तथा एथनोग्राफिकल अप्रोच फार स्टडिंग राकॅ आर्ट इन इंडियन कन्टेक्स्ट शीर्षक से एक लेख भी प्रस्तुत किया।

नई परियोजनाएँ

मध्य भारत एवं झारखण्ड की शैलकला का फोटो एवं विडियो प्रलेखन।

अर्जन

शैलकला पर पुस्तकें , सी.डी.एवं स्लाइड्स इत्यादि इटली से अर्जित किए गए।

प्रदर्शनी

28 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2004 तक रॉक आर्ट आफ इंडिया पर इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के सहयोग से आगरा में एक प्रदर्शनी आयोजित की र्ग। यह प्रदर्शनी 2004 इंटरनेशनल रॉक आर्ट कांग्रेस के साथ होटल जे.पी.पैलेस (आगरा) में लगाई गई थी। इ.गा.रा.क.केन्द्र भी इस अन्तर्राष्ट्रीय अकादमी सभा में सहयोगी था।

कार्यक्रम – ग

जीवन शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न समुदायों की मौखिक परम्पराओं पर विशेष बल दिया गया। यहाँ कलात्मक अभिव्यक्तियों को विभिन्न जीवन शैलियों तथा जीवन कार्यों में सन्निहित रूप से देखा जाता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लोक परम्परा एवं क्षेत्र-सम्पदा दो मुख्य कार्य क्षेत्र है।

लोक परम्परा

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत साँस्कृतिक समुदायों की उन जीवन शैलियों पर बल दिया गया है जो उनके भौतिक एवं प्राकृतिक निवास स्थान, सामाजिक-साँस्कृतिक एवं अर्थशास्त्रीय विधियों एवं उनके सृजनात्मक तथा रचनात्मक जीवन से प्रकट होता है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत परियोजनाएँ, क्षेत्रीय आधार पर किए गए अध्ययन के चारों ओर घूमती है।

सम्पन्न परियोजनाएँ

विलेज इंडिया आइडेन्टिफिकेशन एण्ड एन्हैंसमेन्ट ऑफ इंडियाज़ कल्चरल हैरिटेज : (विकास के प्रबन्धन में एक आन्तरिक आवश्यकता)

इस अध्ययन ने 1.मनुष्य के जीवन को सुधारने में भारत के सांस्कृतिक धरोहर की भूमिका तथा विकास से आए परिवर्तन; 2. भारत की आदान-प्रदान संस्कृति तथा बहुमाध्यमिक-सांस्कृतिक पहलु 3. वर्तमान संस्कृति पर नई तकनीक का प्रभाव ; 4. ग्रामीण जीवन, जिससे भारत की बहुतायत जनसंख्या सम्बन्धित है, के विकल्प एवं मॉडल 5. प्रौद्यौगिकी एवं विकास योजना, नियम एवं विधियों के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया की खोज की। इस अध्ययन ने लोगों की आकांक्षाओं को ध्यान में रख कर विकास योजना के लिए कुछ सुझाव दिए हैं।

सुश्री इतिश्री साहू द्वारा पपेट्री ट्रडिशन ऑफ उड़िसा- यह परियोजना मुख्यतः प्रकरणीय एवं संगीतमय परिवर्तन तथा रूपान्तरणों को केन्द्रित करते हुए उड़ीसा के छाया पुतली अभिनय रावण छाया का प्रलेखन करता है। विस्तृत श्रृव्य-दृश्य प्रलेखन कार्य भी पूरा किया गया। विश्लेषणात्मक वृतांत, उड़िसा में प्रचलित अन्य कठपुतली रंगशाला स्वरुपों के संदर्भ में रावण छाया परम्परा की अतुलनीयता को प्रस्तुत करता है। यह, रावण छाया से जुड़े हुए दोनों मुख्य प्रकरणों, पारम्पारिक एवं तत्कालीन आधुनिक संदर्भ में सुधार के साथ कठपुतली नृत्य का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। कठपुतली बनाना, संरक्षण, पद्धति, तथा शिल्पी, कठपुतलियों के अभिनय, घटनाएँ प्रकरण संगीत, भावकाव्यात्मक अंकन एवं संचालन विधि इस शोध के मुख्य अंग हैं।

डा. एम. के. पाल द्वारा डाकुमेंडेशन, रिसर्ट एण्ड सोशियो-कल्चरल स्टडी ऑफ द टेम्पिल कल्चर मैटिरियल्स ऑफ अलकनन्दा वैली आफ द गढ़वाल हिमालयाज़ :- यह परियोजना गढ़वाल हिमालयों के अलकनन्दा नदी घाटी के साथ के पूर्वी क्षेत्र में किया गया जो देवप्रयाग, कमलेश्वर महादेव मन्दिर, श्रीनगर, रुद्रनाथ मन्दिर, रुद्रप्रयाग शिव मन्दिर कामप्लेक्स, कोटेश्वर एवं अन्य बहुत से (कुल १० मन्दिरों) का उद्गम रहा है। इन मन्दिरों का अध्ययन इनकी ऐतिहासिक एवं समाजिक सांस्कृतिक महत्ता को ध्यान में रख कर किया गया।

डा. रोमा चटर्जी द्वारा फोक लोर वर्सेज फोक-लोरिक कल्चर ऑफ पुरुलियाः

पुरुलिया छो नृत्य के संदर्भ में पुरुलिया के सांस्कृतिक क्षेत्र का एक विस्तृत अध्ययन है। यह कार्य पुरुलिया को सांस्कृतिक मंडल के रूप में देखता है, जिसका केन्द्र छो नृत्य है। यह मौखिक एवं लिखित दोनों संदर्भों पर केन्द्रित है ।

वर्तमान परियोजनाएँ

मौली कौशल द्वारा विकास आयुक्त (हस्तकला) के सहयोग से राजस्थान तथा मध्य प्रदेश की लोक चित्रकलाएं इस परियोजना के अन्तर्गत राजस्थान एवं मध्यप्रदेश सात लोक चित्रकलाऐं के पारम्परिक स्वरूपों को लिया गया है। इनके नाम हैं सांझी, मंडना एवं गौंड आदिवासी चित्रकला सांझी कला परम्परा पर एक सी.डी.रोम तैयार किया जा चुका है। अन्य परम्पराओं का कार्य प्रगति पर है।

डॉ. ओंकार प्रसाद द्वारा संथालों के बीच स्पेस एण्ड टाईम। यह **अद्ययन वी**रभूमि जिले के संथालों के बीच स्पेस (हासे) तथा टाईम (ओक्के) श्रेणियों पर केन्द्रित है। इस अध्ययन में , संथाल अपने जीवन काल में अस्तित्व संकटों का सामना करने में इन श्रेणियों का उपयोग किस प्रकार करते हैं, पर प्रकाश डाला गया है।

श्री मुंशी पण्डित द्वारा देशी वास्तुकला में प्रतीकवाद तथा संस्कारों की भौतिक अभिव्यक्ति। यह अध्ययन, सांस्कृतिक धरोहर तथा पारम्परिक वास्तुकला की उप-पद्धति के रूप में देशी वास्तुकला को समझने पर बल देता है। तथा निर्माण से उनसे धार्मिक प्रक्रियाएँ एवं उत्सव, क्षेत्र की वास्तुकला के प्रतीक वाले चित्रों, वर्तमान वास्तुकला प्रथा के सम्बंध में भवन निर्माण से सम्बंधित धार्मिक प्रक्रियाएँ तथा उत्सव, के संदर्भ में पारम्परिक विश्वास पद्धति तथा वर्तमान संदर्भ में इसकी वैधता, इस अध्ययन के केन्द्र हैं। यह अध्ययन प्रतीकों, क्रियाओं तथा भवन निर्माण के विभिन्न स्तरों को स्पष्ट करने वाले चिह्नों तथा लद्दाख क्षेत्र में प्रचलित पारम्परिक वास्तुकला में मौलिक अभिव्यक्ति के माध्यम से हमारी धरोहर के मूर्त एवं अमूर्त दोनों घटकों के बीच के सम्बंधों को समझने में सहयोग देगा।

नई परियोजनाएँ

भारत के विविध समुदायों तथा उत्तर पूर्व क्षेत्र में धरोहर की प्रगति : प्रो. बी. के. राय बर्मन की अध्यक्षता में भारत के विविध समुदायों के सांस्कृतिक धरोहर के प्रलेखन, संरक्षण, पुनर्जीवन प्रदान तथा प्रसार हेतु एक कार्य दल का गठन किया गया है। प्रथम चरण में, इस कार्यक्रम के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए 15 फरवरी, 2005 को दिल्ली में उत्तर पूर्व तथा अन्य समुदायों के संस्थानों के साथ एक सभा आयोजित की गई ताकि भविष्य के लिए एक ठोस कार्यान्वयन योजना बनाई जा सके। इसकी निरन्तरता में आइ.जी.एन.सी.ए. की कनिष्ठ शोध अधिकारी डॉ. ऋचा नेगी ने इंडीजिनस एण्ड ट्राईबल पीपुल: एम्मपावरमेंट इन एजुकेशन एण्ड सेल्फ रूल नामक सम्मेलन में भाग लिया। इस यात्रा के दौरान डा. नेगी ने उत्तर पूर्व के आदिवासी नृत्यों का प्रलेखन किया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बहुत सी परियोजनाएँ विचाराधीन हैं, जो इस प्रकार है:-

सोशियोलॉजिकल रेमिफिकेशन्स ऑफ द प्रोपोज्ड एशियन हाइवे इन द नार्थ ईस्ट यह अध्ययन दक्षिण पूर्व एशिया (मलेशिया)से उत्तर पूर्वी भारत होते हुए मध्य एशिया (सिल्क रूट) के लम्बे व्यावसायिक रास्ते में संस्कृति, समाज, राज्य एवं बाजारों के मध्य पारस्परिक क्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है। यहाँ समुदायों के जीवन की सम्पूर्णता पर ध्यान केन्द्रित किया गया है।

वूमैन पायनियर्स एण्ड आन्ट्रप्रनर्स इन अरुणाचल प्रदेश : इस परियोजना में शिक्षा, विभिन्न व्यवसायों, सांस्कृतिक गतिविधियों , सामाजिक संगठनों, राजनीति, व्यापार, उद्योग आदि में मूर्धन्य 25-30 महिलों की जीवनी के अध्ययन पर आधारित होगा। इसमें इनकी भौगोलिक स्थिति, समुदाय, पारिवारिक पृष्ठभूमि, प्रेरक तत्त्व तथा रास्ते में आने वाली अड़चनों को रिकॉर्ड किया जाएगा ।

ग्लिम्पसेज ऑफ लाइफ वर्ल्ड ऑफ चिल्ड्रन, एडोलेस्सेंट एण्ड यूथ ऑफ नार्थ-ईस्ट इंडिया- उत्तरी पूर्व भारत के बच्चों, किशोर एवं युवकों के जीवन्त संसार के सामाजिक, मनोविज्ञान एवं मानवीय

सामाजिक अध्ययन पर बल दिया जाएगा। इनमें स्मृतियों, व्यक्तिगत कथाओं, मौखिक सामुदायिक इतिहास के अनुभवों के रूप में डेटा संग्रहीत किया जाएगा।

अर्जन एवं ऑडियो-वीडियो प्रलेखन

- राजस्थान एवं मध्यप्रदेश की लोक-चित्रकलाओं का ऑडियो-विडियो प्रलेखन किया गया।
- 26 फरवरी से 6 मार्च, 2005 तक गुवाहाटी में आयोजित एशियन कांफेरेन्स ऑन इंडिजिनस एण्ड ट्राइबल पीपुल: इम्पावरमेंट इन एडुकेशन एण्ड सेल्फ रूल के दौरान किए गए उत्तर पूर्व क्षेत्र की जनजातियों के नृत्यों के प्रदर्शन का ऑडियो-विडियो प्रलेखन, स्लाइडों में, फोटोग्राफ, रेखा चित्रों पुस्तकों इत्यादि का कार्य सम्पन्न हुआ।

संगोष्ठी तथा परिसवांद

- 18 फरवरी, 2005 को इ.गा.रा.क.केन्द्र में उत्तर पूर्व तथा अन्य समुदायों के दिल्ली के संस्थानों की एक सभा इस उद्देश्य से आयोजित की गई कि भारत में विविध जनसमूहों एवं समुदायों में चल रही जैव-सांस्कृतिक प्रथाओं के गहन अध्ययन के संचालन तथा समन्वय के लिए एक ठोस कार्य योजना बनाई जा सके, ताकि अध्ययन के पश्चात् इन प्रथाओं का प्रलेखन, शोध, सरंक्षण, सत्यापन, पुनरुज्जीवन एवं प्रसार किया जा सके।

  8-9 मार्च, 2005 को मेरठ विश्वविद्यालय में चौ चरण सिहं विश्वद्यिालय एवं इ.गा.रा.क.केन्द्र द्वारा रशियन लैंग्वैज, लिटरेचर एण्ड कल्चर टुडे पर एक दो दिवसीय अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विभिन्न विवादित विषयों पर जैसे साहित्य एवं शिक्षा, भाषा विज्ञान तथा शैलीविज्ञान, एवं सांस्कृतिक तथा सामाजिक विषयों पर एक गहन एवं विस्तृत चर्चा हुई इस संगोष्ठी में रूस, यूक्रेन, किर्गिस्तान, ईरान एवं पुर्तगाल तथा भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से लगभग 41 विशेषज्ञों ने लेख प्रस्तुत किए।

  रूस एवं सी.आई.एस. में चल रहा प्रथम सत्र सामाजिक मुद्दों पर एवं दूसरा सत्र सांस्कृतिक समाजिक विषयों पर था। तीसरे सत्र का शीर्षक था, सोवियत गणतंत्र के बाद की अवधि में विभिन्न शैलीगत अभिव्यक्ति में भाषा की अवस्था। साहित्य को समर्पित सत्र में वक्ताओं ने आधुनिक रुसी साहित्य के समकालीन रुसी समाज के नवीन्तम प्रवृति तथा 20वीं एवं आरम्भ की 21वीं शताब्दी में रूस में इसकी भूमिका तथा सम्बद्धत, का चित्रण तथा परिक्षण किया। पाचँवे सत्र में अनुवाद के लिए एक नए ढंग के माडल को प्रस्तावित किया गया ताकि रूसी अंग्रेजी संरचनाओं के बीच भाषा विज्ञान की भिन्नताओं की समस्याओं का समाधान किया जा सके। छठा सत्र अनुवाद से सम्बंधित था जिसमें यूक्रेन, किर्गिस्तान,के द्विभाषीय जैसी समस्याओं को लिया गया।

  18 मार्च, 2005 को रूस एवं क्रिगिज़ विशेषज्ञों के बीच एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें युरोसिपा कार्नर की स्थापना की सम्भावनाओं पर विचार विमर्श किया जा सके। इस अवसर पर

लिट्रेचरयामा गज़ेटा के संयुक्त सम्पादक प्रो० वासिसंकि ने रूसी साहित्य में समकालीन प्रवृत्तियों पर व्याख्यान दिया। प्रो. वासिसंकि के अतिरिक्त जिन्होंने इस सभा में भाग लिया वह थे मास्को स्टेट यूनिवर्सिटी के एक इण्डोलोजिस्ट, डा. गुजेल स्ट्रेलकोवा, क्रिगिज़ रशियन स्लाविक यूनिवर्सिटी से डा इन्दिरा मुस्सइना, दिल्ली यूनिवर्सिटी से डा० संजना सकसेना तथा, जवाहरलाल यूनिवर्सिटी से प्रो० अजय पटनायक। इस सभा में रूस के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं विद्वानों के साथ मध्य एशिया की मौखिक महाकाव्य परम्परा पर सहयोगात्मक अध्ययन,तथा निकट भविष्य में सम्मेलन का आयोजन करने पर विचार हुआ।

प्रदर्शन

- आदि नाद कार्यक्रम के अन्तर्गत पाण्डवानी का प्रलेखन उषा वार्ले द्वारा किया गया।
- विभाग के वार्षिक दिवस के अवसर पर पंथी नृत्य का आयोजन किया गया।

प्रकाशन

आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित प्रकाशन कार्य समाप्त हुए :-

- पुस्तक-फोकलोर, पब्लिक स्फेयर एण्ड सिविल सोसाइटी, (आई.जी.एन.सी.ए. एवं एफ एस.सी. प्रकाशन)
- सी.डी.रोम - सांझी आर्ट ट्रेडिशन ऑफ राजस्थान एण्ड मध्य प्रदेश

नेशनल मिशन ऑन इंटेजिबल कल्चरल हैरिटेज (एन.एम.आई.सी.एच.) के लिए फार्मेट इत्यादि तैयार करना:-

भारत के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर पर भारत सरकार के मिशन, जिसके लिए आई.जी.एन.सी.ए. को एक नोडल एजेन्सी के रूप में नामांक्रित किया गया है, के अन्तर्गत संस्कृति मंत्रालय को निम्नलिखित फार्मेट तैयार करके सौंपे गए।

1. भारत की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर तथा जीवन्त मानवीय कोश राष्ट्रीय सूची पर फॉर्मेट के लिए डेटा एकत्रित करने के लिए फार्मेट।
2. भारत की कलाओं एवं शिल्प पर डेटा एकत्रित करने के लिए फार्मेट
3. मौखिक इतिहासों पर डेटा एकत्रित करने के लिए फार्मेट।

यह फार्मेट आइ. सी. एच. पर तथा जीवन्त मानवीय कोश पर आरम्भिक डेटा एकत्रित करने के लिए फार्मेट तैयार किए गए है ताकि आई.सी.एच. पर एक डिजिटल राष्ट्रीय डेटा बैंक तैयार किया जा सके।

क्षेत्र-सम्पदा

एक नूतन आयाम तथा लोक संस्कृति पर इसके प्रभाव की खोज करने के लिए जनपद सम्पदा प्रभाग के जीवन शैली अध्ययन कार्यक्रम ने क्षेत्र सम्पदा कार्यक्रम की कल्पना की जो एक साँस्कृतिक क्षेत्र या स्थल- विशेष या एक मन्दिर तथा उसके एककों का सम्पूर्ण रूप से अध्ययन करेगा। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत आलोच्य वर्ष में निम्नलिखित कार्य किए गए।

नई परियोजनाएँ

केरल में श्री पी. आर. जी.माथुर द्वारा क्षेत्र सम्पदा आफ गुरवयूर टेम्पल फेज़-2 पर कार्य आरंभ कर दिया गया है। इस भाग में मंदिरों के दृश्यों एवं रीतियों, कार्य संचालन, गतिविधियों एवं सामाजिक संरचना एवं मंदिरों के महोत्सव एवं उत्सवों पर अध्ययन किया जाएगा। प्रथम चरण में मंदिरों के वास्तुशिल्पीय कला वास्तुकला मंदिर में उपयोग हेतु स्थान एवं विद्यमान मूर्त्तियों पर अध्ययन किया जाएगा। इस अवस्था में मन्दिर स्थल एवं धार्मिक प्रक्रियाएँ, मन्दिर को चलाने वालों तथा सामाजिक संस्था, तथा मन्दिर में होने वाले त्योहारों एवं उत्सवों पर अध्ययन किया जाएगा।

प्रकाशन

डॉ० आर० नागास्वामी की पुस्तक आइकॉनाग्राफी ऑफ बृहदीश्वर टेम्पल मुद्रणाधीन है।

नेटवर्किंग

इस प्रभाग की कार्यविधियों मे और अधिक विद्वानों को संस्थान के साथ जोड़ कर विद्वानों के नेटवर्क का और अधिक विस्तार किया गया। कुछ विद्वानों की सूची इस प्रकार है- प्रो० नंदिनी सुंदर, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स,डॉ० एस०एम० पटनायक, दिल्ली यूनिवर्सिटी, प्रो० वी० ज़ाज़ा, डॉ. जे बारा, जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी, डॉ० सुकान्त चौधरी, लखनऊ यूनिवर्सिटी से श्री संजय उपाध्याय, वकील तथा पर्यावरण कार्यकर्त्ता, दिल्ली, डॉ. जे. बारा, मेडिकल प्रैक्टिश्नर जिन्हें उत्तर पूर्व के विषय में गहन जानकारी प्राप्त है, तथा प्रो. ए. के. डांडा, एशियाटिक सोसाइटी।

कलादर्शन

कलादर्शन प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के कार्यकलापों के प्रस्तुतीकरण एवं नानाविध कलाओं के बीच सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक संवाद हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इस प्रभाग ने अभिव्यक्ति तथा प्रस्तुति की एक अद्‌भुत शैली विकसित की है। यह प्रभाग इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शैक्षणिक कार्यकलापों से सम्बन्धित प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, सभाओं एवं व्याख्यानों का आयोजन करता है।

प्रदर्शनियाँ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र विभिन्न माध्यमों में काम करने वाले कलाकारों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। निम्नलिखित तीन प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया जिनके माध्यम से चित्रकारी में भारतीय साहित्यिक धरोहर, काव्य तथा चित्रकारी के अन्तस्सम्बन्ध, दैनन्दिन जीवन, चित्रकारी तथा रंगो की अन्तक्रिया की अभिव्यक्ति उजागर की गई।

१. **एपिक एपिसोडः** ६ अक्तूबर, २००४ को भारत के राष्ट्रपति महमहिम डॉ. अब्दुल कलाम ने विख्यात मूर्तिकार अमरनाथ सहगल की प्रथम चित्र-प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया। प्रदर्शनी २५ अक्तूबर, २००४ तक चली। श्री सहगल के चित्रों का आधार रामायण एवं महाभारत थे। उन्होंने इन्हें मिथकीय घटनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया बताया।

२. **त्रयीः** तीन कवियों-उदयन वाजपेयी, शिरीष डोभले और रूस्तम की कविताओं एवं तीन चित्रकारों-श्री मोहन मालवीय, सिराज सक्सेना और राजेश पाटिल की कृतियों की एक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन १२ अक्तूबर को डॉ. अशोक बाजपेयी ने किया। इस अवसर पर तीनों कवियों ने अपनी रचनाएँ पढ़ी। त्रयी का उद्देश्य था अभिव्यक्ति - साधानों की परस्पर पूरकता तथा कलाकार द्वारा भावाभिव्यक्ति के लिए परस्पर माध्यम का आश्रय लेने को प्रदर्शित करना।

३. **पञ्चमः** पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री माननीय श्री मणि शंकर अय्यर ने श्रीमती सुधा पिल्लै के चित्रों की प्रदर्शनी का २५ फरवरी, २००५ को उद्‌घाटन किया। यह ८ मार्च, २००५ तक चली। नित्य प्रति की साधारण वस्तुओं में रंगो की छटा को प्रदर्शनी ने रोखांकित किया।

कला और संस्कृति के सेतु-निर्माण का कार्य इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संविधान में विहित है। कलादर्शन अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इसे अभिव्यक्त करता है। परस्पर संवाद को बढ़ाने को लिए निम्नलिखित प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईः-

४. **गैप-सिक्स ईयर्स इन इण्डियाः** ११ से ३०नवम्बर, २००४ को नेदरलैण्ड दूतावास के सहयोग से एक फ्रेंच कलाकार, सुश्री गैप के तैल-चित्रों, चित्रों तथा टेपेस्टरी की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई।

५. **मल्टीपल एन्काउण्टर्स: एन एक्ज़िबिशन ऑफ इण्डो-यू एस प्रिण्ट्स:** १४ नवम्बर, २००४ को अमेरिका के न्यूयार्क के मैनहट्टन ग्राफिक सेण्टर के सहयोग से इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गाया। यद्यपि पश्चिम में प्रिण्टमेकिंग एक मान्य कला-रूप है; भारत में इसे कोई ख़ास पहचान नहीं मिली। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य इस तकनीक के महत्त्व को रेखांकित करना है। इसमें ६४ भारतीय एवं ६८ अमेरिकी प्रिण्टमेकर्स की कृतियाँ पसिद्ध हैं। ४ दिसम्बर, २००४ को भारत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री वी.पी. सिंह ने समापन-समारोह के दौरान प्रिण्ट्स का एक सूचीपत्र विमोचित किया। इस अवसर पर भूमिका ट्रूप ने प्रिण्टमेकिंग की कला पर गुरू नरेन्द्र शर्मा द्वारा निर्देशित फेस ओवर फेस नामक नृत्य-नाटिका प्रदर्शित की।

६. **एटर्नल गंगा:** एक फ्रेंच फोटोग्राफर, मिराई जोसेफीन ग्वेज़ेनेक की फोटोग्राफ्स की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। सुश्री मिराई ने गंगोत्री से बनारस तक गंगा की यात्रा के चित्र लिए और इस प्रदर्शनी का आयोजन उत्तरांचल सरकार के पर्यटन विभाग के सहयोग से किया गया।

७. **इटालियन रिसोर्गिमेण्टो:** इटली के स्वाधीनता संग्राम तथा भारत और इटली में मानव के गौरव की खोज के प्रदर्शन के लिए, यह प्रदर्शनी इटालियन इंस्टिट्यूट ऑफ कल्चर के सहयोग से आयोजित की गई। इसके साथ एक-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया। १५ फरवरी, २००५ को सूचना-प्रसारण एवं संस्कृति मंत्री माननीय श्री जयपाल रेड्डी, इटली के संस्कृति मंत्री तथा अनेक विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में इटली के राष्ट्रपति ने इस प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। यह २७ फरवरी, २००५ तक चली। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आदि दृश्य कार्यक्रम के अनुपूरक के रूप में निम्नलिखित प्रदर्शनी आयोजित की गई:-

८. **राक आर्ट ऑफ इण्डिया :** इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल के संग्रह से शैल-कला पर एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। २३ दिसम्बर, २००४ को भारत सरकार की संस्कृति सचिव श्रीमती नीना रञ्जन ने इसका उद्घाटन किया और यह ३ जनवरी, २००५ तक चली।

बाल-जगत् कार्यक्रम के अन्तर्गत, स्कूली बच्चों के काम निम्नलिखित प्रदर्शनी में दर्शाए गए:-

९. **आकार-प्रकार:** नैनीताल के शेरवुड स्कूल के ७ से १२वीं कक्षा के छात्रों द्वारा बनाए गए चित्र, फोटो, क्ले-मॉडलिंग, सिरेमिक पॉटरी, काष्ठकला तथा बुनकारी का प्रदर्शन इस प्रदर्शनी में किया गया। १० दिसम्बर, २००४ को इसका उद्घाटन दिल्ली की मुख्यमंत्री माननीय श्रीमती शीला दीक्षित द्वारा किया गया। यह १९ दिसम्बर, २००४ तक चली। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने बच्चों की कलाकृतियों को मंच उपलब्ध करवाया एवं दिल्ली के स्कूलों से इन बच्चों का संवाद स्थापित किया।

तेय्यम उत्सव: यह भारत के प्राचीनतम जीवित लोक-नृत्यों में परिगणित होता है। इसका मंचन केरल के उत्तरी भागों में होता है एवं इसका उत्स जनजातीय समानों से है। यह मंदिरों, पवित्र कुंजों, पैतृक घरों और खुली जगहों में प्रदर्शित किया जाता है। २४ मार्च, २००५ को श्रीमती नीना रंजन ने तैय्यम पर एक

राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साथ ही पेपिता सेठ द्वारा एक प्रदर्शनी इन गॉडस मिरर्स का आयोजन भी किया गया। इन्दिरा गांधी मानव संग्रहालय, भोपाल से संग्रहीत इसी विषय पर चित्रों की प्रदर्शनी सेक्रेड ग्रोव्स ऑफ इंडिया लगाई गई। इन आयोजनों से जीवन-शैली अध्ययन और कलै एवं लोक की अन्तर्क्रिया संबंधी इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की सामग्री बढ़ी। इस उत्सव में निम्नलिखित प्रदर्शन हुए:-

२४ मार्च-कथ्थिवनूर वीरन:- क्षेत्रीय वीर मण्डप्पन की कथा जो राजा की ओर से लड़ते हुए आत्मघात कर वीरगति को प्राप्त हुआ।

घण्टकर्णन: ये शिव का स्वरूप माने जाते हैं। कलाकार अपनी कमर और पगड़ी पर १६-१६ मशालें पहनते हैं। कहा जाता है कि घण्टकर्णन् दारिंकासुर को परीजित करने के प्रतीक के रूप में आग को खा लेते हैं।

२५ मार्च - गुलिकन: यह मृत्यु का देवता है। मनुष्य और पशुओं दोनों को सताता है। गुलिकन तेय्यम संसार के कष्ट दूर करने के लिए किया जाता है।

रक्तचामुण्डी:- चण्ड और मुण्ड नामक असुरों को मारने के बाद यह देवी की उपासना है। इसमें वस्त्र बहुत सजे-धजे होते हैं।

४. अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ:-

टूवर्ड्स हार्मनी: कान्फ्लिक्ट, रिसोल्यूशन एण्ड रिकंसिलिएशन:- १७ दिसम्बर, २००४ को सूचना एवं प्रसारण, तथा संस्कृति मंत्री माननीय श्री जयपाल रेड्डी ने इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन किया। १९ दिसम्बर तक चलने वाली इस संगोष्ठी में आस्ट्रेलिया, अमेरिका, केन्या. कनाडा, जापान तथा भारत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ ही साथ ये दो प्रदर्शन आयोजित किए गए:

१. **पांडवाणी:-** १७ दिसम्बर, २००४ को छत्तीसगढ़ से प्रख्यात कलाकार सुश्री ऋतु वर्मा ने पांडवाणी का मंचन किया।

२. **राजा फोकलवा** - १७ दिसम्बर, २००४ को श्री राकेश तिवारी द्वारा निर्देशित छत्तीसगढ़ की लोककथा पर आधारित एक हास्य नाटक का मंचन किया गया।

कार्यशालाएँ

ट्रेडिशनल आर्ट नामक कार्यशाला का आयोजन ७ से १९ अक्तूबर, २००४ को परम्परिक कलाकारों को लिए किया गया। आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और तमिलनाडु से ३५ कलाकारों के एक समूह ने भाग लिया। कार्यशाला के समापन के समय तीन प्रदर्शन (कालबेलिया, (राजस्थान), घूमर (राजस्थान) तथा बाडल संगीत (पं० बंगाल) का आयोजन किया गया।

स्मारकीय व्याख्यान

२२वाँ हज़ारी प्रसाद द्विवेदी व्याख्यान का आयोजन १९ अगस्त, २००४ को किया गया। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के सहयोग से आयोजित इस व्याख्यान का शीर्षक था- द्विवेदी और साहित्य की ऋषि परम्परा। व्याख्याता श्री प्रभाष जोशी थे। हिन्दी के जाने-माने पक्षकार डॉ. मैनेजर पाण्डेय ने समारोह की अध्यक्षता की।

बाल जगत कार्यक्रम

१३ जुलाई से ६ अगस्त २००४ तथा २१ से ३० अगस्त २००४ तक माउण्ट सेंट मेरी स्कूल, दिल्ली के छात्रों के लिए एक छः सप्ताह की कार्यशाला का आयोजन किया गया। वरिष्ठ रंगकर्मियों और तकनीशियन्स ने इस कार्यशाला में व्याख्यान दिए।

कार्यशाला के अन्त में, हबीब तनवीर के नाटक चरनदास चोर का मंचन इन बच्चों द्वारा किया गया। इसका प्रथम मंचन स्कूल सभागार (३१ अगस्त, २००४) तथा द्वितीय मंचन इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में (२ सितम्बर, २००४) को हुआ।

सार्वजनिक व्याख्यान/प्रदर्शन

अपने इस कार्यक्रम के माध्यम से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रख्यात विद्वानों तथा युवा अध्येताओं को अभिव्यक्ति के लिए मंच उपलब्ध करवाता है।

१. लियोनार्दो द विंसी एण्ड इंडिया विषय पर एक व्याख्यान इटालियन एम्बेसी कल्चरल सेण्टर, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित किया गया। १२ अक्तूबर, २००४ को इटली के माकेराटा विश्वविद्यालय के भाषा, साहित्य एवं भाषावैज्ञानिक अनुसंधान विभाग के प्रो. कार्लो वेके ने यह व्याख्यान दिया।

२. ७ जून, २००४ को केरल के फोकलेण्ड इंटरनेशनल सेंटर फॉर फोकलोर एण्ड कल्चर के दल के साथ डॉ. वी. जयराजन ने कलरिपट्टु (केरल की पारम्परिक युद्ध कला) पर एक प्रदर्शन-व्याख्यान दिया।

३. १३ फरवरी, २००५ को बसन्त पंचमी के अवसर पर ध्रुपद संगीत की पोषक एक सभा-ध्रुपदम् के सहयोग से द्रुपद परम्परा पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. अनिल चौधरी द्वारा द्रुपद पर एक श्रृव्य-दृश्य प्रस्तुति दी गई।

सूत्रधार

कार्मिक

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची अनुबन्ध-३ में दी गई है।

सेवा एवं आपूर्ति विभाग

यह प्रभाग समूचे कार्यालय के साजोसमान एवं फर्नीचर की मरम्मत एवं रख-रखाव का उत्तरदायी है। इसमें आतिथ्य, लेखा-सामग्री वितरण, परिवहन , सीजीएचएस एवं कार्यालय के अन्य रख-रखाव के कार्यों के लिए विभिन्न अुनभाग हैं।

भवन परियोजना कमेटी

1. सरकार ने वर्ष 1985 में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के स्थायी भवन संकुल निर्माण के लिए 100 करोड़ के पूंजी परिव्यय का अनुमोदन प्रदान किया और साथ ही नई दिल्ली के सेण्ट्रल विस्ता क्षेत्र में स्थित 24, 706 एकड़ भूमि इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को आंबटित की ।

2. संकुल की संरचना निम्न आठ भवनों के सुघटित एकबद्ध समूह पर आधारित है:-

   1. कलानिधि, कलाकोश एवं सम्मिलित संसाधन क 2.सूत्रधार, भूमिगत पार्किंग खण्ड बी 3.जनपद सम्पदा 4. प्रदर्शनी दीर्घाएँ 5. अभिलेखागार एवं आवासीय खण्ड, जिसमें ती रंगशाला भवन है। 6. कान्सर्ट हाल (2000 व्यक्तियों के लिए) 7. भारतीय रंगशाला (400 व्यक्तियों के लिए) 8. राष्ट्रीय रंगशाला (1200 व्यक्तियों के लिए)एक ओपन थियेटर की योजना भी बनाई गई है।

3. इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भवन परियोजना अनेक व्यवधानों एवं कठिनाइयों को पार करके, अंततः फलवती हुई और इसके प्रथम भवन कलानिधि, कलाकोश, सम्मिलित संसाधन क का उद्घाटन भारत के आदरणीय प्रधानमंत्री द्वारा 19 नवम्बर, 2001 को सम्पन्न हुआ।

४. कलानिधि (भवन-1) के पश्चात् , दूसरे भवन (भवन-2) का कार्य प्रारम्भ किया गया। इसका भौतिक निर्माण कार्य जून, 1999 को आरम्भ हुआ,परन्तु नींव के स्तर पर ही धन न मिलने के कारण कार्य को दो वर्ष के लिए स्थगित करना पड़ा।

५. एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया, जो इ गा रा क केन्द्र भवन परियोजना से सम्बन्धित सभी तथ्यों को देखेगी और कार्यकारिणी समिति/न्यास को सलाह देगी। इस समिति ने यह भी निर्णय लिया कि **जैसा है जहाँ है** के आधार पर सभी कार्यों को वही रोक दिया जाए , केवल अत्यावश्यक संविदाओं को पूर्ण किया जाए जिससे भवन को उपयोग में लाया जा सके।

६. भारत सरकार से मिले अनुदान का उपयोग किया । वर्तमान प्रशासनिक खर्चे इ०गा०रा०क०केन्द्र से प्राप्त अनुदान से चल रहे हैं।

७. कलानिधि, कलाकोश तथा सम्मिलित संसाधन **क** के भवन आंशिक रूप से इ०गा०रा०क०केन्द्र के विभिन्न विभागों द्वारा प्रयोग में लाए जा रहे हैं।

समन्वय

क - सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (सी०ई०पी०)

संस्कृति मंत्रालय के माध्यम से इ०गा०रा०क०केन्द्र को जर्मनी, फ्रांस और कोरिया गणराज्य से सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम मिले। इसके अन्तर्गत १.०३.२००५ को डॉ० रमेश गौड़ पुस्तकालय अध्यक्ष ने जर्मनी से सम्बन्धित उक्त कार्यक्रम के लिए संस्कृति मंत्रालय में हुई बैठक में भाग लिया । जर्मनी की सांस्कृतिक सलाहकार सुश्री आंके राइफेन्स्तुई भी इस बैठक में थी। इसी तारीख को डॉ० गौड़ ने फ्रांस सम्बन्धी बैठक में भी भाग लिया।

संस्कृति मंत्रालय ने कोरिया गणराज्य के साथ सी०ई०पी०के कार्यान्वयन का काम इं०गा०रा०क०केन्द्र को सौंपा ताकि संस्कृति के क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग में सहभागिता बढ़े ।

सेनेगल गणराज्य के साथ भारत ने सी०ई०पी० पर हस्ताक्षर किए तथा इं०गा०रा०क०केन्द्र को कला एवं हस्तशिल्प प्रदर्शनी आयोजित करने का जिम्मा सौंपा । कलादर्शन संभाग से मामले में उचित कार्यवाही कर रहा है।

भारत और इटली के मध्य सी०ई०पी० के अन्तर्गत डॉ० बी०एल मल्ला ने २००४ में इटली का दौरा किया और ८ से १४ सितम्बर तक २१वें अन्तर्राष्ट्रीय वाल्कामोनिका सिम्पोज़ियम में भाग लिया ।

ख. इन्दिरा गांधी स्मारकीय अध्येतावृत्ति

कलाओं, मानविकी-विषयों तथा संस्कृति के क्षेत्र में सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक कार्य में अपने आप को स्वतंत्रतापूर्वक संलग्न रखने के लिए प्रख्यात एवं अत्यन्त प्रातिभ व्यक्तियों को समुचित अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, इं०गा०रा०क०केन्द्र ने श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम से स्मारकीय अध्येतावृत्ति की एक योजना प्रारम्भ की है । ये अध्येतावृत्तियाँ, किसी भी विषय के ऐसे विद्वानों/सृजनधर्मी कलाकारों के लिए हैं, जिनके पास सृजनात्मक परियोजनाएँ हैं और जो बहुविषयक अथवा संकुल-सांस्कृतिक स्वरूप का शोध कार्य करने को तत्पर हैं। आवेदकों को ऐसे सृजनात्मक अथवा समालोचनात्मक कार्य का प्रामाणिक अनुभव होना चाहिए, जो विशुद्ध अकादमिक स्वरूप के संकुचित क्षेत्र तक ही सीमित न हो । अध्येता, भारत के अन्दर ही, अपनी पसन्द के किसी भी स्थान पर, कार्य करने को स्वतन्त्र होंगे । किसी भी समय, वृत्ति प्राप्त करने वाले अध्येताओं की संख्या छह से अधिक नहीं होगी । प्रत्येक अध्येता को 12,000/- रूपये प्रतिमाह की वृत्ति, 2500/ रूपये की सचिवीय सहायता तथा दो वर्ष की अवधि के लिए 25,000/- रूपये आकस्मिक एवं यात्रा भत्ते के रूप में दिए जाऐंगे ।

इस अध्येतावृत्ति की स्थापना 1996 में हुई थी तथा उस वर्ष यह पुणे के विख्यात मराठी एवं अंग्रेजी

लेखक श्री दिलीप चित्रे को दी गई थी। वर्ष 1997 में, दो प्रसिद्ध महानुभावों-विख्यात परंपरागत संगीतज्ञ उस्ताद आर० फहीमुद्दीन डागर और अंग्रेजी एवं मलयालम के विख्यात लेखक प्रो० के अय्यप्पा पणिक्कर, को ये वृत्तियाँ दी गईं । वर्ष 1998 में दो सुपात्र अध्येताओं-नृतत्त्वशास्त्री डॉ० (श्रीमती) पद्मा एम० सारंगपाणि तथा इण्डोनेशिया के संगीतज्ञ प्रो० बामबंग सुनर्तो को ये अध्येतावृत्तियाँ दी गईं । 1999 में, दो लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों- उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में, इतिहास के प्रोफेसर, प्रो० के०एस० बहेरा तथा स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर की प्रो० नलिनी माधव ठाकुर को इन वृत्तियों के लिए चुना गया । वर्ष 2000 के लिए दो ख्यातनामा विद्वानों; प्रो० डी०डी०शर्मा और प्रो०एस०एन० गोस्वामी को ये अध्येतावृत्ति प्रदान की गई है ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वानों का शैक्षणिक योगदानः-

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विद्वानों ने देश-विदेश में आयोजित अनेक संगोष्ठियों/कार्यशालाओं/सम्मेलनों में प्रतिभागिता की एवं शैक्षणिक योगदान दिया ।

२ से८ अक्तूबर, २००४ को म्यूज़ियम एण्ड इन्टैंजिबल हैरिटेज विषय पर कोरिया के सियोल शहर में आयोजित २०वीं एवं २१वीं इण्टर नेशनल काउन्सिल ऑफ म्यूज़ियम्स की महासभा में डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती, सदस्य-सचिव इ०गा०रा०क०केन्द्र ने प्रतिभागिता की। सम्मेलन के दौरान उन्होंने अमूर्त्त धरोहर पर एक नेटवर्क स्थापित किया तथा इसके प्रलेखन, प्रसार एवं पुनरुज्जीवन के लिए नीतिबद्ध कार्यक्रम बनाने पर ज़ोर दिया। इसके अनुरूप इ०गा०रा०क०केन्द्र में कोरिया से मिली दृश्य एवं श्रव्य अभिलेखीय सामग्री के साथ एक इण्डो-कोरिया कॉर्नर बनाए जाने का प्रस्ताव है। सदस्य-सचिव ने कोलम्बो, श्रीलंका में सातवीं ए०वी०आई०ए०कार्यशाला (३०जुलाई से अगस्त २००४) में भाग लिया। इसके दौरान दक्षिण एवं दक्षिण एशियाई कला एवं पुरातत्त्व के ऊपर ग्रन्थ सूची परक डेटा बेस तैयार करने एवं इसके कार्यान्वयन के लिए जरूरी क़दम उठाए गए। उन्होंने देश-विदेश में आयोजित अन्य कई संगोष्ठियों में भाग लिया । डॉ० चक्रवर्ती ने शैल-कला विज्ञान, इथनोग्राफी,आर्ट हिस्ट्री,म्यूज़ियम विज्ञान एवं प्रबन्धन पर अनेक व्याख्यान दिए।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र - दक्षिणी क्षेत्र केन्द्र बैंगलौर

भारत के दक्षिण प्रान्तों के क्षेत्र अध्ययनों में अनुसन्धान एवं विद्वता को बढ़ाने हेतु इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र की स्थापना वर्ष 2001 में की गई।

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र ने मंदिरों के त्यौहार, धार्मिक क्रियाएँ, वास्तुकला, रंगमंच, लोक एवं जनजाति कलाओं से सम्बन्धित कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यों को किया।

गत वर्ष कर्नाटक में टेम्पल फैस्टिवल एण्ड रिचुअल्स प्रोग्राम के अन्तर्गत मेलकोटे के मंदिरों के विभिन्न त्यौहारों को दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र में प्रलेखित किया गया । थेप्पोत्सव, रामानुजाचार्य तिरु नक्षत्र, मुख्य विग्रह का अभिषेक, कृष्ण राज मुडि उत्सव, अमन्नवर वर्धन्ती तथा पवित्रोत्सव आदि संस्कारों को इन के सामाजिक, आध्यात्मिक एवं वैदिक महत्त्व के कारण अभिलेखित किया गया । प्रकाशन एवं सीडी का निर्माण इस कार्यक्रम के द्वितीय चरण(२००५-२००६)किया जाएगा।

उडुपी कृष्ण मठ तथा मैसूर के नजंनगढ़ में गिरिजा कल्याण नामक महोत्सव भी अभिलेखित किए गए । टेम्पल आर्किटेक्चर इन साऊथ इंडिया कार्यक्रम के अन्तर्गत दक्षिण भारत के मुख्य तीन राजवंशों द्वारा भगवान् शिव को समर्पित मुख्य तीन मंदिरों के अनुसन्धान एवं फोटो प्रलेखन का दायित्व लिया गया। वे हैं:- कैलाशनाथ मन्दिर - कांचीपुरम (पल्लव 715-746 ईस्वी) विरूपाक्ष मंदिर, पट्टदकल (विश्व दाय स्मारक) चालुक्य 733-745 ईस्वी) एवं कैलाश टेम्पल, एलोरा (विश्वदाय स्मारक) (राष्ट्रकूट 756-773 ईस्वी) एवं मंदिरों के फोटो प्रलेखन का कार्य किया जा रहा है। यह परियोजना दो खण्डों में विभक्त है। प्रथम खण्ड में मंदिर निर्माण का प्रारम्भिक विकास तथा दूसरे में दक्षिण भारत में मंदिर निर्माण का मध्यकालीन विकास सम्मिलित है। यह एक सावधिक परियोजना है ।

दीर्घावधिक परियोजना आर्ट एक्सपिरिएन्स के अन्तर्गत २४अगस्त, २००४ को थियरी ऑफ रस-ध्वनि-औचित्य-वक्रोक्ति पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया ।

तमिलनाडु के चुनिन्दा भित्ति चित्र स्थलों का सर्वेक्षण, प्रलेखन एवं अध्ययन:-

इस परियोजना के अन्तर्गत दक्षिण भारत चार प्रान्तों में चुनिंदा स्थलों के भित्ति चित्रों का प्रलेखन कार्य चल रहा है। फेज -I में प्रलेखित स्थल हैं: वदराज पेरुमल मंदिर-कांचीपुरम (विजयनगर -16 वीं शताब्दी), कैलाशनाथ मंदिर- कांचीपुरम (पल्लव-8वीं शताब्दी के आरम्भ में) त्रिलोकनाथ मंदिर-कांचीपुरम (विजयनगर-14वीं से 16वीं शताब्दी) सिल्लान्नवासल गुफा मंदिर-पुडुकोटै (पांड्य-9वीं शताब्दी) विजयालय चोलीश्वर मंदिर नार्थमलाई-पुडुकोटै (13वीं शताब्दी), रामलिंगविलासम प्रासाद-रामनाथपुरम (नायक 18वीं शताब्दी)। प्रथम खण्ड में डिजिटाइज़ेशन का कार्य पूरा किया गया।

कर्नाटक के सागर तालुक में स्थित नादकलशी के चालुक्य मंदिर के उत्कीर्ण रेखाचित्रों का सर्वेक्षण तथा डिजिटल प्रलेखन किया गया ।

नाट्यशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार संस्कृत नाटक स्वप्नवासवदत्तम् की सृजनात्मक प्रस्तुति; इसका पोस्ट प्रोडक्शन का कार्य पूरा हो चुका है। यह धारावाहिक के रूप में डीडी ९ दूरदर्शन बैंगलोर से आठ भागों में प्रसारित किया गया। इसकी सीडी शीघ्र प्रकाशय है।

दृश्य-कला एवं हस्तशिल्प पर एक पाक्षिक कार्यशाला का आयोजन एस०आर०सी बैंगलोर में किया गया। इसमें हस्तनिर्मित कार्ड बनाने की क्षीयमाण कला जिसे भारत के विभिन्न भागों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है; के ३३मर्मज्ञों ने भाग लिया। इस कार्यशाला तथा गंजीफा कार्ड की कला का डिजिटल प्रलेखन भी किया गया ।

6-11-2004 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यासी

1. श्री आर० वेंकटारामन
2. डॉ० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी
3. श्री पी०वी० नरसिम्हा राव
4. श्री जगमोहन
5. श्री गुलाम नबी आजाद
6. श्रीमती सोनिया गांधी
7. प्रो० यशपाल
8. श्री आबिद हुसैन
9. पं० भीमसेन जोशी
10. प्रो० विद्यानिवास मिश्र
11. डॉ० एच० नरसिम्हैया
12. श्री एम० वी० कामत
13. डॉ० भूपेन हज़ारिका
14. सुश्री अन्जलि इला मेनन
15. श्रीमती सोनल मानसिंह
१६. डॉ० के०जे०येसूदास
१७. डॉ० एम०एस० स्वामिनाथन
१८. डॉ० वेदान्तम् सत्यनारायण सरमा
१९. प्रो० पी०वी०कृष्णा भट्ट
२०. डॉ० सूर्यकान्त बाली
२१. डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती, सदस्य सचिव, इ०गा०रा०क०केन्द्र

अनुबन्ध-2

31.03.2005 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यासी

1. प्रो० ए० रामचन्द्रन
2. श्री अदूर गोपालकृष्णन्
3. उस्ताद अमजद अली खाँ
4. डॉ० कपिला वात्स्यायन
5. डॉ० कर्ण सिंह
6. श्री मृणाल सेन
7. डॉ० आर० नरसिम्हन
8. श्री रामनिवास मिर्धा
9. श्री रतन टाटा
10. श्री सलमान हैदर
11. शहरी विकास मंत्री
12. सूचना एवं प्रसारण मंत्री
13. डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती, सदस्य सचिव इ०गा०रा०क०केन्द्र

31 मार्च, 2005 तक कार्यकारिणी समिति का गठन नहीं हुआ था ।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अधिकारियों की सूची
(31.3.2006 तक)

डॉ० कल्याण कुमार चक्रवर्ती	सदस्य सचिव
सदस्य सचिव का सचिवालय	अवर सचिव
श्री जॉय कुरियाकोस	

कलानिधि

1.	डॉ० आर०सी० गौड़	
2.	श्री आर० भरताद्रि	कार्यक्रम निदेशक मीडिया प्रोडक्शन (इ गा रा क केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर आगत)
3.	डॉ० गौतम चटर्जी	रिसर्च एसोशिएट एवं लेखक
4.	श्री वीरेन्द्र बंगरू	प्रलेखन अधिकारी (स्लाइड्स)
5.	श्री प्रमोद किशन	रिप्रोग्राफी अधिकारी
6.	श्री दिलीप कुमार राणा	अनुसंधान अधिकारी (राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन में सहायक निदेशक पद पर प्रतिनियुक्त)

कलाकोश

1.	प्रो० जी०सी०त्रिपाठी	प्रो० एवं विभागाध्यक्ष, कलाकोश
2.	डॉ० मधु खन्ना	एसोशिएट प्रोफेसर
3.	डॉ० एन०डी०शर्मा	एसोशिएट प्रोफेसर
4.	डॉ० अद्वैतवादिनी कौल	सम्पादक
5.	डॉ० राधा बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
6.	डॉ० वी०एस० शुक्ल	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
7.	डॉ० बच्चन कुमार	अनुसंधान अधिकारी
8.	डॉ० कीर्त्तिकान्त शर्मा	अनुसंधान अधिकारी

वाराणसी कार्यालय

1.	डॉ० सुकुमार चटोपाध्याय	वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी
2.	डॉ० एन०सी०पाण्डेय	वरिष्ठ अनुसन्धान अधिकारी
3.	डॉ० उर्मिल शर्मा	सलाहकार (शैक्षणिक)

जनपद-सम्पदा

1.	डॉ० मौली कौशल	एसोशिएट प्रोफेसर
2.	श्री टी० राजगोपालन	उप-सचिव
3.	डॉ० बंसीलाल मल्ला	वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी
4.	डॉ० रमाकर पन्त	अनुसंधान अधिकारी

कलादर्शन

1.	प्रो० इन्द्रनाथ चौधुरी	शैक्षणिक निदेशक, प्रो०एवं विभागाध्यक्ष, कलादर्शन
2.	श्रीमती सबीहा ज़ैदी	कार्यक्रम निदेशक

सूत्रधार

1.	श्री पी०झा	निदेशक (एम०एम०)
2.	श्री जी० कृष्णमूर्त्ति	मुख्यलेखाधिकारी
3.	श्री आर० सी० सहोत्रा	प्रधान निजी सचिव
4.	श्री टी० एलोशियस	अवर सचिव
5.	श्री रवि कान्त गुप्त	अवर सचिव
3.	श्रीमती सुधा गोपालाकृष्ण	एसोशिएट प्रोफेसर (निदेशक रा.पा.मिशन)
4.	श्रीमती नीलम गौतम	वरिष्ठ लेखाधिकारी
5.	श्रीमती मंगलम् स्वामिनाथन	उप-निदेशक (आई एण्ड पी आर)

दक्षिणी क्षेत्रीय केन्द्र , बैंगलोर

1.	डॉ० रोदम नरसिम्हा	अवैतनिक समन्वायक
2.	प्रो० एस०सेतार	अवैतनिक समन्वायक
3.	डॉ० चूडामणि नन्दगोपाल	एसोशिएट प्रोफेसर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के वाराणसी शाखा कार्यालय में वरिष्ठ अनुसंधान सहायक

कलाकोश प्रभाग

1.	डॉ० सुजाता रेड्डी	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता

वाराणसी शाखा

1.	डॉ० पार्वती बनर्जी	वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता
2.	डॉ० रमा दुबे	कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता

क्षेत्रीय केन्द्र , बैंगलोर

1.	डॉ० प्रॅमिला लोचन	अनुसंधान सहायक
2.	श्रीमती खुराना विजेन्द्रा	अनुसंधान सहायक

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना जी०ओ०एम०एल०, चेन्नई)

1.	श्री जे० मोहन	अनुसंधान अध्येता
2.	श्री पी०पी०श्रीधर उपाध्याय	अनुसंधान अध्येता
3.	श्रीमती पार्वतम	अनुसंधान अध्येता

कलानिधि प्रभाग (माइक्रोफिल्म परियोजना आर०ओ०आर०आई, अलवर)

1.	डॉ० (श्रीमती) रमा शर्मा	अनुसंधान अध्येता

वर्ष 2004-2005 के प्रकाशनों की सूची

कलामूलशास्त्र

अजितमहातन्त्र
काण्वशतपथब्राह्मण खण्ड-5
शिल्प प्रकाश

कलासमालोचन

द स्केल ऑफ इंडियन म्यूज़िक
क्राफ्टिंग ट्रेडिशन ऑफ इंडिया
इन द कम्पनी ऑफ गॉड्स
ए मोनोग्राफ ऑन मादाम ला मेरी
एसेज़ ऑन जैन आर्ट

लोक-परम्परा

फोक लोर,पब्लिक स्फीयर एण्ड सिविल सोसाईटी
सीडी रोम सांझी आर्ट ट्रेडिशन ऑफ राजस्थान एण्ड मध्यप्रदेश